mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-04 अंक-171 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

सतना
21 जून 2024 शुक्रवार

दैनिक मीडिया ऑडीटर

दैनिक मीडियाऑडीटर

सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

मंधाना और ... @ पेज 7

संक्षिप्त समाचार

केजरीवाल की जमानत याचिका पर ट्रायल कोर्ट में फैसला सुरक्षित

- ईडी बोली-हवा में जांच नहीं की, केजरीवाल की दलील-केस कल्पना पर आधारित

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली शराब नीति केस में गिरफ्तार हुए अरविंद केजरीवाल की जमानत याचिका पर राउज एवेन्यू कोर्ट में गुरुवार को लगातार दूसरे दिन सुनवाई हुई। जज न्यायबिंदु की वेकेशन बेंच ने ईडी और केजरीवाल की दलीलें सुनने के बाद फैसला सुरक्षित रख लिया। ईडी की ओर से पेश हुए एडिशनल सॉलिसिटर जनरल एसवी राजू ने कहा कि ईडी ने हवा में जांच नहीं की है। केजरीवाल के खिलाफ पुख्ता सबूत है। उन्हें बेल नहीं मिलनी चाहिए। वहीं, केजरीवाल की ओर से पेश हुए वकील विक्रम चौधरी ने कहा कि केजरीवाल के खिलाफ पूरा केस सिर्फ कल्पना पर आधारित है। केजरीवाल को 21 मार्च को अरेस्ट किया गया था। 1 अप्रैल को वे तिहाड़ जेल भेजे गए। सुप्रीम कोर्ट ने 10 मई को उन्हें अंतरिम जमानत दी थी। जमानत पर 21 दिन बाहर रहने के बाद 2 जून की शाम 5 बजे केजरीवाल ने तिहाड़ में सरेंडर किया था। बुधवार को केजरीवाल की न्यायिक हिरासत खत्म हुई थी, जिसे कोर्ट ने 3 जुलाई तक बढ़ा दिया था।

कुवैत में आग मामले में 3 भारतीय समेत 8 गिरफ्तार

- 45 भारतीयों की मौत हुई थी, कुवैत सरकार मृतकों के परिवार को 12.5 लाख मुआवजा देगी

मंगाफ (एजेंसी)। कुवैत की इमारत में लगी भीषण आग के मामले में अधिकारियों ने 3 भारतीय, 4 मिस्र के नागरिक और 1 कुवैती को गिरफ्तार किया है। 12 जून को तड़के 6 मंजिला बिल्डिंग में लगी आग में कुल 50 लोगों की मौत हुई थी, जिनमें 45 लोग भारतीय थे। इस बिल्डिंग में 196 कामगार रहते थे, जिनमें से ज्यादातर भारतीय थे। अरब टाइम्स की रिपोर्ट के मुताबिक, गिरफ्तार किए गए 8 लोगों

को 2 हफ्ते की पुलिस रिमांड पर भेजा गया है। उन पर लापरवाही और हत्या के आरोपों में केस दर्ज किया गया है। कुवैत के अमीर शेख मेशल अल-अहमद अल-जाबेर अल-सबाह ने बुधवार को घोषणा की थी कि पीड़ितों के परिजनों को साढ़े 12 लाख का मुआवजा दिया जाएगा। कुवैत के सरकारी सूत्रों के मुताबिक, यह पैसे विदेशी कामगारों के दूतावास को दिए जाएंगे, जहां से ये उनके परिजनों तक पहुंचेंगे। मरने वालों में भारत के अलावा फिलिपींस के भी नागरिक थे। कुवैत ने मामले की जांच के लिए एक टीम भी बनाई है। इसे आग लगने का कारण ढूंढने का काम सौंपा गया है। यह हादसा बुधवार सुबह करीब 4.30 बजे हुआ।

देशभर में 110 मौतें 40,000 से अधिक बीमार

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूरे देश में भीषण गर्मी की मार से कई लोग मर चुके हैं। कोरोना महामारी के दौरान जिस तरह के मृतकों का आंकड़ा इकट्ठा किया जा रहा था ठीक वैसे ही अब हीट स्ट्रोक से मरने वालों का आंकड़ा भी इकट्ठा किया जाने लगा है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा इकट्ठे किए गए आंकड़ों के अनुसार, मार्च से अब तक देश में हीटस्ट्रोक से 110 मौतें हुई हैं। इनमें से छह पिछले मंगलवार को दर्ज की गई। इसके अलावा, इस गर्मी में हीटस्ट्रोक के 40,272 मामले सामने आए हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, सबसे ज्यादा मौतें उत्तर प्रदेश (36) में हुई, उसके बाद बिहार (17) और राजस्थान (16) में। उसके बाद बिहार, राजस्थान और ओडिशा में लोगों की जान गई हैं। हालांकि, हीटस्ट्रोक के सबसे ज्यादा मामले मध्य प्रदेश में दर्ज किए गए। रिपोर्ट के मुताबिक, अनौपचारिक रूप से शेयर किए गए आंकड़ों के अनुसार, एमपी में हीटस्ट्रोक के 10,636 मामले दर्ज किए गए, लेकिन सिर्फ पांच मौतों की पुष्टि हुई

- कोरोना की तरह अब आने लगे हीट स्ट्रोक के आंकड़े

है। मई के अंत तक हीटस्ट्रोक से केवल 56 मौतें हुई थीं और कुल 24,849 मामले सामने आए थे। एक अधिकारिक सूत्र ने बताया, उपलब्ध आंकड़े राज्यों की ओर से दिए गए अंतिम आंकडें नहीं हैं। इसलिए यह संख्या बढ़ भी सकती है। जारी किए गए आंकड़ों के अनुसार, सिर्फ 18 जून को ही हीट स्ट्रोक से छह लोगों की मौत हुई है।

दिल्ली बनी अब 'लू' से मौतों की राजधानी

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश की बड़ी आबादी इस बार प्रचंड गर्मी और लू से जूझ रही है। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली भी इससे अछूती नहीं है। हालात ऐसे हैं कि घर के बाहर ही नहीं, घर के अंदर भी लोग हीट स्ट्रोक का शिकार हो रहे हैं। एक रिपोर्ट के मुताबिक, बीते 10 दिनों में करीब 200 मौतें दिल्ली में गर्मी और लू

की वजह से हुई हैं। इस रिकॉर्ड तोड़ गर्मी का सबसे ज्यादा शिकार बेघर लोग बन रहे हैं। गैर-सरकारी संगठन सेंटर फॉर होलिस्टिक डेवलपमेंट की एक रिपोर्ट के अनुसार, 11 से 19 जून के दौरान दिल्ली में 192 बेघर लोगों के मौत की सूचना मिली है। पिछले 48 घंटे में दिल्ली के प्रमुख अस्पतालों में 116 ब्रॉट डेड मरीजों की पुष्टि हुई है। इसमें 30 मरीजों की मौत हीट स्ट्रोक और गर्मी से संबंधित बीमारी की वजह से हुई है।

इनकम टैक्स छूट की सीमा बढ़ा सकती है मोदी सरकार

- 10 लाख तक की आय पर टैक्स छूट की उम्मीद, सेक्शन 80ए में भी बदलाव संभव

नई दिल्ली (एजेंसी)। नरेंद्र मोदी सरकार वित्त वर्ष 2024-25 का पूर्ण बजट जुलाई के तीसरे सप्ताह में पेश कर सकती है। ऐसे में मिडिल क्लास और टैक्सपेयर्स को राहत मिलने की उम्मीद है। रॉयटर्स के मुताबिक, मोदी 3.0 अपने पहले बजट में 10 लाख सालाना कमाने वाले लोगों के लिए इनकम टैक्स की दरों में कटौती करने पर विचार कर रही है। इसके अलावा सरकार इनकम टैक्स स्लैब में बदलाव करने की प्लानिंग कर रही है। चुनावी साल होने के चलते वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 1 फरवरी को 2025 के लिए अंतरिम बजट पेश किया था। तब वित्त मंत्री ने इनकम टैक्स से जुड़ी कोई बड़ी घोषणा नहीं की था। बजट में सरकार यह राहत एक खास सैलरी वर्ग और मिडिल क्लास को दे सकती है। वहीं, मनीकंट्रोल ने सरकारी सूत्रों के हवाले से बताया कि सरकार बजट में इनकम टैक्स छूट की सीमा को 3 लाख से बढ़ाकर 5 लाख कर सकती है। यह बदलाव केवल नई टैक्स रिजीम के तहत रिटर्न फाइल करने वालों पर लागू होगा। मान लीजिए, किसी की सालाना इनकम 5 लाख रुपए है तो उसे छूट मिल सकती है।

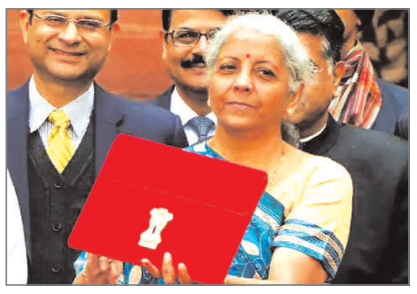

राहुल ने कहा-मोदी पेपर लीक मामले को रोकना नहीं चाहते

नई दिल्ली (एजेंसी)। नीट एग्जाम विवाद पर राहुल गांधी ने गुरुवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस की। कहा, भारत जोड़ो यात्रा के दौरान हजारों युवाओं ने पेपर लीक की शिकायत की थी। अब नीट पेपर में घोटाले की बात सामने आई है। यूजीसी-नेट रद्द हो गई है। खबरें थी कि पीएम मोदी ने रूस-यूक्रेन के बीच लड़ाई एक फोन करके रुकवा दी थी। गाजा और इजराइल की लड़ाई भी एक फोन करके रुकवाई थी। कुछ कारणों से नरेंद्र मोदी भारत में पेपर लीक नहीं रोक पा रहे हैं, या रोकना नहीं चाह रहे हैं। राहुल ने कहा कि पेपर लीक के पीछे कारण यह है कि एजुकेशन सिस्टम को भाजपा के पेरेंट ऑर्गेनाइजेशन ने कैप्चर कर लिया है। जब तक इसे पलटा नहीं जाएगा, तब तक पेपर लीक जारी रहेगा। मोदी जी ने यह होने दिया है, जो कि एंटी-नेशनल एक्टिविटी है। नीट यूजी एग्जाम को कैंसिल कराए जाने की मांग को लेकर देशभर में प्रदर्शन हो रहे हैं। लखनऊ यूनिवर्सिटी में छात्रों ने शिक्षा मंत्री के इस्तीफे की मांग की है।

बोले-
हर परीक्षा में धांधली, एजुकेशन सिस्टम को भाजपा के लोगों ने कैप्चर किया

तमिलनाडु में जहरीली शराब का आतंक, 34 की मौत

100 से ज्यादा लोगों का इलाज जारी, कलेक्टर-एसपी हटाए गए

कल्लाकुरिची (एजेंसी)। तमिलनाडु के कल्लाकुरिची में जहरीली शराब पीकर मरने वालों की संख्या बढ़कर 34 हो गई है, जबकि 100 से ज्यादा लोगों का अलग-अलग अस्पतालों में इलाज चल रहा है। पुलिस के मुताबिक इन लोगों ने पैकेट में मिलने वाली शराब पी थी। कल्लाकुरिची जिले के करुणापुरम में 18 जून को हुई घटना के पीड़ितों में ज्यादातर दिहाड़ी मजदूर हैं। शराब पीने के बाद रात होते-होते इन लोगों को दस्त, उल्टी, पेट दर्द और आंखों में जलन होने लगी। पुलिस ने इस मामले में के कन्नूकुट्टी (49) समेत 4 लोगों को गिरफ्तार कर लिया है। कन्नुकुट्टी के पास से लगभग 200 लीटर जहरीली शराब बरामद हुई, जिसमें

मेथेनॉल मिला हुआ है। कल्लाकुरिची में 12 एम्बुलेंस तैनात हैं। पुलिस के मुताबिक मरने वालों का पोस्टमॉर्टम कराया जा रहा है। रिपोर्ट आने पर मौत की असली वजह सामने आएगी। घटना के बाद राज्य सरकार ने कल्लाकुरिची के कलेक्टर-एसपी को हटा दिया है। इनकी जगह एमएस प्रशांत को कलेक्टर और रजत चतुर्वेदी को एसपी नियुक्त किया है। एचसी के वकीलों ने मद्रास हाईकोर्ट से कल्लाकुरिची मामले पर तत्काल सुनवाई करने की अपील की। जस्टिस डी कृष्णकुमार और के कुमारेश बाबू की बेंच 21 जून को इस पर सुनवाई करेगी। मुख्यमंत्री ने केस की जांच के लिए मद्रास हाईकोर्ट के रिटायर्ड जज जस्टिस बी गोकुलदास की अध्यक्षता में आयोग बनाने का निर्देश दिया है। साथ ही मरने वालों के परिवारों को 10-10 लाख रुपए की मदद देने का ऐलान किया है। 20 से ज्यादा लोगों को कल्लाकुरिची मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती कराया गया था।

केंद्र ने नीट पेपरलीक पर बिहार ईओयू से मांगी रिपोर्ट

- डिप्टी सीएम विजय सिन्हा का दावा-तेजस्वी के पीएस ने मास्टरमाइंड का कमरा बुक कराया था

पटना (एजेंसी)। नीट एग्जाम विवाद के बीच बिहार के डिप्टी सीएम विजय कुमार सिन्हा ने गुरुवार को बड़ा खुलासा किया। सिन्हा ने कहा कि नीट पेपर लीक मामले के आरोपियों के लिए सरकारी गेस्ट हाउस तेजस्वी यादव के निजी सचिव प्रीतम कुमार ने बुक कराया था। डिप्टी सीएम ने बताया कि 1 मई को प्रीतम ने सरकारी गेस्ट हाउस के कर्मचारी प्रदीप कुमार को फोन किया और पेपर लीक कांड के मास्टरमाइंड सिकंदर कुमार यादवेंदु के लिए कमरा बुक करने को कहा। गेस्ट हाउस के एंट्री रजिस्टर में अनुराग यादव का नाम है। उसके आगे मंत्री जी लिखा है। सिन्हा का दावा है कि ये मंत्री जी तेजस्वी यादव के लिए लिखा गया था। इधर बीच, केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय ने बिहार पुलिस की आर्थिक अपराध इकाई से डिटेल रिपोर्ट मांगी है। कहा कि रिपोर्ट मिलने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी। पटना के सरकारी गेस्ट हाउस से कैंडीडेट को लेकर सेफ जगह पर ले जाया गया था।

बिहार में आरक्षण बढ़ाने का फैसला हाईकोर्ट ने किया रद्द

नीतिश सरकार को पटना हाईकोर्ट ने दे दिया तगड़ा झटका

सरकार ने 50 से बढ़ाकर 65 फीसदी किया था आरक्षण

पटना (एजेंसी)। पटना हाईकोर्ट ने बिहार सरकार के आरक्षण सीमा बढ़ाए जाने के फैसले को गुरुवार को खारिज कर दिया। राज्य सरकार ने शिक्षण संस्थानों और सरकारी नौकरियों में एससी-एसटी, ओबीसी और ईबीसी को 50 फीसदी से बढ़ाकर 65 फीसदी आरक्षण देने का फैसला लिया था। इसे हाईकोर्ट में चुनौती दी गई थी। पटना हाईकोर्ट में चीफ जस्टिस केवी चंद्रन की बेंच ने गौरव कुमार और अन्य की याचिकाओं पर 11 मार्च को सुनवाई पूरी कर फैसला सुरक्षित रख लिया था। याचिकाकर्ता ने तर्क दिया था कि रिजर्वेशन इन कैटेगरी की आबादी की बजाय इनके सामाजिक और शिक्षा में पिछड़ेपन पर आधारित होना चाहिए। बिहार सरकार का फैसला संविधान के अनुच्छेद 16(1) और अनुच्छेद 15(1) का उल्लंघन है। अनुच्छेद 16(1) राज्य के तहत किसी भी कार्यालय में रोजगार या नियुक्ति से संबंधित मामलों में सभी नागरिकों के लिए समानता का अवसर प्रदान करता है। अनुच्छेद 15(1) किसी भी प्रकार के भेदभाव पर रोक लगाता है। सरकार ने आरक्षण का दायरा बढ़ाकर ओबीसी, ईबीसी, दलित और आदिवासियों का आरक्षण 65 फीसदी कर दिया था।

आरक्षण पर आर पार सुप्रीम कोर्ट जाएगी बिहार सरकार

- डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी का ऐलान, आरजेडी भी ऐक्टिव

पटना (एजेंसी)। पटना हाईकोर्ट द्वारा बिहार आरक्षण कानून रद्द करने के फैसले पर बिहार के डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी ने बड़ा बयान देते हुए कहा कि राज्य सरकार पटना हाईकोर्ट के फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट का रुख करेगी। आपको बता दें पटना हाईकोर्ट के द्वारा बिहार में आरक्षण की सीमा को 50 प्रतिशत से बढ़ाकर 65 फीसदी करने के नीतीश सरकार के फैसले को रद्द कर दिए जाने के बाद राज्य की सियासत गर्मा गई है। इस मामले पर आरजेडी ने भी सुप्रीम कोर्ट के दरवाजे को खट खटाने की बात कही है। नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने कहा कि अगर राज्य सरकार सुप्रीम कोर्ट नहीं जाएगी तो आरजेडी सुप्रीम कोर्ट जाएगी। आपको बता दें बिहार सरकार के 65 फीसदी आरक्षण बढ़ाने वाले कानून को पटना हाईकोर्ट ने रद्द कर दिया है। बीते साल नीतिश कुमार के नेतृत्व वाली महागठबंधन की सरकार ने जातीय सर्वेक्षण रिपोर्ट के आधार पर ईबीसी, ओबीसी, दलित और आदिवासी का आरक्षण 65 परसेंट कर दिया था।

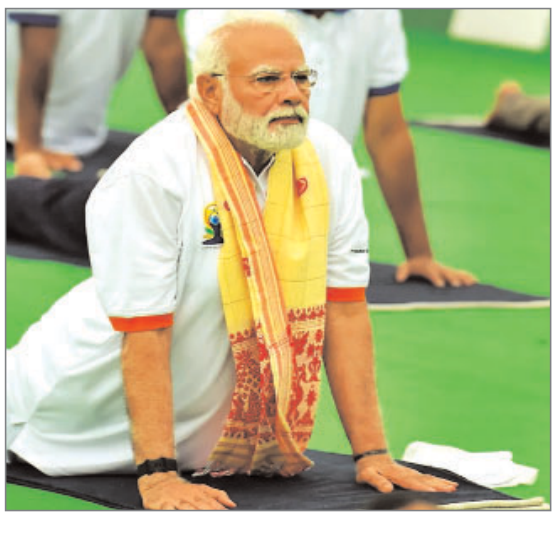

कश्मीर में 7000 लोगों के साथ योग करेंगे पीएम मोदी

कार्यक्रम आज, पुलिस ने श्रीनगर को घोषित किया 'टेंपररी रेड जोन'

श्रीनगर (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम में हिस्सा लेने के लिए गुरुवार शाम श्रीनगर पहुंच गए हैं। यह पहली बार है जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तीसरी बार देश की कमान संभलाने के बाद कश्मीर पहुंचे हैं। प्रधानमंत्री शुक्रवार को शेर-ए-कश्मीर इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस सेंटर में 'एंपावरिंग यूथ, ट्रांसफॉर्मिंग जेएंडके' इवेंट में भी हिस्सा लेंगे। कश्मीर यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जम्मू-कश्मीर राज्य में 1500 करोड़ रुपये से ज्यादा के मल्टी डेवलपमेंट प्रोजेक्ट्स का भी उद्घाटन करेंगे। वह 1,800 करोड़ रुपये की लागत वाले कृषि से संबंधित एक प्रोजेक्ट को भी लॉन्च करेंगे। पीआईबी द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 21 जून को सुबह करीब साढ़े छह बजे श्रीनगर में 10वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम में शिरकत करेंगे। इस दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कार्यक्रम में आए लोगों को संबोधित भी करेंगे और फिर योग सत्र में शिरकत करेंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की कश्मीर विजिट से पहले शहर में सुरक्षा के खास बंदोबस्त किए गए हैं। जम्मू-कश्मीर पुलिस ने श्रीनगर में कई लेयर की सुरक्षा व्यवस्था बनाई है।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर सामूहिक योग और श्रीअन्न संवर्धन अभियान का शुभारंभ

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। दसवें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस तथा श्रीअन्न संवर्धन अभियान का शुभारंभ 21 जून को प्रदेश स्तर पर वृहद रूप में किया जायेगा। जिला स्तरीय कार्यक्रमों में उप मुख्यमंत्री, मंत्री एवं राज्य मंत्री जिला मुख्यालयों में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि होंगे। राज्य शासन द्वारा उप मुख्यमंत्री, मंत्री एवं राज्य मंत्री को जिले आवंटित किये गये हैं। इसमें उप मुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा मंदसौर, उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल रीवा, मंत्री श्री कुँवर विजय शाह खण्डवा, मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय इंदौर, मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल नरसिंहपुर, मंत्री श्री राकेश सिंह जबलपुर, मंत्री श्री करण सिंह वर्मा सीहोर, मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह नर्मदापुरम, मंत्री श्रीमती सम्पतिया उइके मण्डला, मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट देवास, मंत्री श्री एदल सिंह कंषाना श्योपुर, मंत्री सुश्री निर्मला भूरिया झाबुआ, मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत सागर, मंत्री श्री विश्वास सारंग विदिशा, मंत्री श्री नारायण सिंह कुशवाह ग्वालियर, मंत्री श्री नागर सिंह चौहान अलीराजपुर, मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर गुना, मंत्री श्री राकेश शुक्ला भिण्ड, मंत्री श्री चेतन काश्यप रतलाम, मंत्री श्री इंदर सिंह परमार शाजापुर एवं राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर हरदा, राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री धर्मेन्द्र भाव सिंह लोधी छिंदवाड़ा, राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री दिलीप जायसवाल अनूपपुर, राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री गौतम टेटवाल राजगढ़, राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री लखन सिंह पटैल दमोह, रायसेन, राज्य मंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी सतना, राज्य मंत्री श्री दिलीप अहिरवार छतरपुर और राज्य मंत्री श्रीमती राधा सिंह सिंगरौली में शामिल होंगे। उल्लेखित जिलों के अतिरिक्त शेष जिलों में कलेक्टर यह सुनिश्चित करेंगे कि जन-प्रतिनिधियों की सहभागिता में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस तथा अन्न संवर्धन अभियान का शुभारंभ कार्यक्रम व्यापक स्तर पर आयोजित हो।

संक्षिप्त समाचार

मध्यप्रदेश के किसानों को पीएमकेवाय में 17वीं किश्त की राशि 1643 करोड़ रुपये जारी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना (पीएमकेवाय) में केन्द्र सरकार द्वारा मंगलवार 18 जून को मध्यप्रदेश के किसानों के खाते में 17वीं किश्त की राशि जारी की गयी। किसानों को लाभान्वित करने में प्रदेश की जनसंख्या के मान से हितग्राही पंजीयन संख्या अनुसार मध्यप्रदेश का देश में दूसरा स्थान है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने मंगलवार को वाराणसी से मध्यप्रदेश के 80 लाख से अधिक हितग्राही किसानों के खाते में एक हजार 643 करोड़ रुपये की राशि अंतरित की। पीएमकेवाय में योजना के प्रारंभ वर्ष 2019-20 से लेकर अब तक 25 हजार 320 करोड़ रुपये की राशि मध्यप्रदेश के हितग्राही किसानों के खाते में अंतरित की जा चुकी है।

बच्चों को शिक्षा के साथ संस्कार भी दिए जाएं

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। छात्रों को शिक्षा के साथ अच्छे संस्कार प्रदान करना आवश्यक है। यही भविष्य में देश का नाम रोशन कर राष्ट्रहित में सहयोग प्रदान करेंगे। इस आशय के विचार प्रदेश के संस्कृति, पर्यटन, धार्मिक न्यास और धर्मस्व राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) धर्मेन्द्र सिंह लोधी ने जबेरा के सीएम राइज स्कूल पहुंचकर स्कूल चले हम अभियान के दौरान शाला प्रवेशोत्सव कार्यक्रम में व्यक्त किये। उन्होंने शाला प्रवेश कार्यक्रम का शुभारंभ वाद्ययंत्र बजाकर किया। मंत्री श्री लोधी ने कहा कि सीएम राइज स्कूल जबेरा प्रदेश में अपनी एक अलग छवि बना रहा है। विद्यार्थियों ने इस वर्ष परीक्षा परिणाम में उत्कृष्टता प्राप्त की है। उन्होंने पालको से आग्रह करते हुये कहा कि बच्चों को उनकी रूचि अनुसार निर्णय लेने में साथ दें। अपनी इच्छा उन पर न थोपें। राज्यमंत्री श्री लोधी ने छात्र-छात्राओं को पुस्तकें वितरित की और विद्यार्थियों द्वारा बनाये गये मॉडल प्रदर्शनी का अवलोकन किया। कार्यक्रम के दौरान राज्यमंत्री श्री लोधी ने सीएम राइज स्कूल बिल्डिंग निर्माण कार्य का जायजा लेकर आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

अमरवाड़ा विधानसभा क्षेत्र के लिये नामांकन के चौथे दिन 2 नाम निर्देशन पत्र जमा हुए

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। छिंदवाड़ा जिले की विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 123 अमरवाड़ा (अजजा) में उपचुनाव के लिए 14 जून 2024 से जारी नाम निर्देशन-पत्र दाखिल करने की प्रक्रिया में नाम निर्देशन पत्र जमा करने के चौथे दिन 19 जून को 2 अभ्यर्थियों द्वारा 2 नाम निर्देशन पत्र जमा किये गये। दिनांक 14 जून से अब तक पाँच अभ्यर्थियों द्वारा छह नाम निर्देशन पत्र दाखिल किये जा चुके हैं। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री अनुपम राजन ने बताया है कि नाम निर्देशन पत्र भरने की अंतिम तारीख 21 जून 2024 है। नाम निर्देशन पत्रों की संवीक्षा 24 जून को की जायेगी। नाम वापसी की अंतिम तारीख 26 जून है। मतदान 10 जुलाई को होगा। मतगणना 13 जुलाई को होगी। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री राजन ने बताया कि नाम निर्देशन पत्र दाखिल किये गये अभ्यर्थियों के शपथ पत्र एवं अन्य जानकारियां भारत निर्वाचन आयोग की वेबसाइट की लिंक पर देखी जा सकती हैं।

कलेक्टर श्री सिंह ने लगाई व्यवस्थाओं के लिए अधिकारियों की ड्यूटी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के आतिथ्य में 21 जून को लाल परेड ग्राउंड, भोपाल में राज्य स्तरीय कार्यक्रम आयोजित होना प्रस्तावित है। कलेक्टर श्री कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने विभाग से संबंधित आयुक्त नगर पालिक निगम, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत, पुलिस उपायुक्त जोन-1, पुलिस उपायुक्त यातायात, अधीक्षण यंत्री शहर मध्य क्षेत्र विवि कंपनी लिमिटेड, मुख्य स्वास्थ्य एवं चिकित्सा अधिकारी / सिविल सर्जन, जय प्रकाश चिकित्सालय, जिला आयूष अधिकारी, महाप्रबंधक भारतीय दूर संचार, क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी, सहायक आयुक्त आदिम जाति कल्याण, जिला शिक्षा अधिकारी, जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास, जिला खाद्य आपूर्ति नियंत्रक, सब डिवीजनल मजिस्ट्रेट शहर वृत्त, अनुविभागीय दण्डाधिकारी, बैरागढ़, हुजूर, कोलार, टीटी नगर सभी आवश्यक व्यवस्थाएं किया जाना सुनिश्चित करें। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री ऋतुराज सिंह संपूर्ण कार्यक्रम के प्रभारी अधिकारी रहेंगे।

शाहपुरा तालाब के सुंदरीकरण पर विधायक रामेश्वर शर्मा ने उठाए सवाल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। शहर के शाहपुरा तालाब का 12 करोड़ रुपये खर्च कर सुंदरीकरण करने की तैयारी नगर निगम द्वारा की गई है। इस पर हुजूर क्षेत्र से विधायक रामेश्वर शर्मा ने सवाल उठाए हैं। इसको लेकर उन्होंने नगर निगम आयुक्त और प्रमुख सचिव नगरीय विकास एवं आवास को पत्र लिखा है। उन्होंने पत्र लिखकर अपना मत दिया है कि तालाब का सुंदरीकरण करने के बजाय इसके आसपास पसरे अतिक्रमण और बढ़ते जा रहे कब्जों को हटाने पर ध्यान देना चाहिए।

बारिश-करंट से बचने के उपाय

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मॉनसूनी मौसम तक के दौरान हवा में नमी के कारण करंट लगने की आशंका ज्यादा रहती है। करंट से लोगों की मौत हो जाती है। इनमें से ज्यादातर मौतों को टाला जा सकता है। ज्यादातर मौतें घरों में अर्थिंग नहीं होने या कमजोर अर्थिंग की वजह से होती है। अर्थिंग या तो स्थानीय स्त्रोत से प्राप्त की जा सकती हैं या घर पर ही गहरा गढ्ढा खोदकर खुद बनाई जा सकती हैं। घर में अर्थिंग की उचित व्यवस्था करें। हरे रंग के तार को हमेशा याद रखें, इसके बिना कभी बिजली उपकरण का प्रयोग न करें, खास कर जब यह पानी के स्त्रोत को छू रहा हो। पानी करंट के प्रवाह की गति को बढ़ा देता है, इसलिए नमी वाले माहौल में अतिरिक्त सावधानी रखें। तीन पिन वाले प्लग का प्रयोग करते समय ध्यान रखें कि तीनों तार जुड़े हों और पिनें खराब न हों। तारों को सॉकेट में लगाने के लिए माचिस की तीलियों का प्रयोग न करें। किसी भी तार को तब तक न छुएं, जब तक बिजली बंद न कर दी गई हो। अर्थिंग के तार को न्यूट्रल के विकल्प के तौर पर प्रयोग न करें। सभी जोड़ों पर बिजली वाली टेप लगाएं, न कि सेलोटेप या बेंडेड। गीज़र के पानी का प्रयोग करने से पहले गीज़र बंद कर दें। हीटर प्लेट का प्रयोग नंगी तार के साथ न करें। घर पर सूखी रबड़ की चप्पलें पहनें। घर पर मिनी सर्किट ब्रेकर और अर्थ लीक सर्किट ब्रेकर का प्रयोग करें। मेटलिक बिजली उपकरण पानी के नल के पास न रखें। रबड़ के मैट और रबड़ की टांगों वाले कूलर स्टैंड बिजली उपकरणों को सुरक्षित बना सकते हैं। केवल सुरक्षित तारें और फ्यूज का ही प्रयोग करें। अर्थिंग की जांच हर छह महीने में करते रहें। किसी भी आम टैस्टर से करंट के लीक होने का पता लगाया जा सकता है। फ्रिज के हैंडल पर कपड़ा बांध कर रखें। प्रत्येक बिजली उपकरण के साथ बताए गए निर्देश पढ़ें।

मंत्री उईके ने बच्चों को दिव्यांगता प्रमाण पत्र वितरित किये

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री श्रीमती संपतिया उईके ने मंडला में विश्व सिकल सेल एनीमिया दिवस पर कहा कि लक्षण होने पर तुरंत जाँच करायें एवं बीमारी का नियमित उपचार लें। सरकार सिकल सेल एनीमिया से पीड़ित रोगियों को दिव्यांगता संबंधित सभी सुविधाएँ दे रही है। सरकार सिकल सेल एनीमिया की जाँच और उपचार सहित शोध पर भी ध्यान दे रही है, जिससे इसके बचाव एवं उपचार को और आसान बनाया जा सके।

पीड़ितों तक उपचार सुविधाएँ पहुँचाने के लिये भी प्रयास किये जा रहे है। मंत्री श्रीमती उईके ने मंडला में सिकल सेल एनीमिया पीड़ित बच्चों को दिव्यांगता प्रमाण-पत्र वितरित किये, जिससे इन्हें दिव्यांगता संबंधी छूट का लाभ मिल सके। उन्होंने सिकल सेल जागरूकता पर आयोजित प्रदर्शनी का अवलोकन किया। मंत्री श्रीमती उइके ने सिकल सेल स्क्रीनिंग शिविर का निरीक्षण भी किया।

कमला नेहरू कन्या उमावि पीटीएम में शामिल हुए स्कूल शिक्षा मंत्री

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। स्कूल शिक्षा एवं परिवहन मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह बुधवार को शासकीय कमला नेहरू कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, भोपाल में स्कूल चलें हम अभियान के तहत अभिभावक - शिक्षक संवाद कार्यक्रम (पीटीएम) में शामिल हुए। स्कूल शिक्षा मंत्री श्री सिंह ने माँ भारती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलित कर पीटीएम का शुभारंभ किया। पीटीएम को संबोधित करते हुए स्कूल शिक्षा मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह ने कहा कि कमला नेहरू विद्यालय सत्र 2025-26 में सीएम राईज विद्यालय करीब 60 करोड़ रुपए की लागत से बनकर तैयार होगा। श्री सिंह ने कहा कि पहले परिजन अपने बच्चों को प्राइवेट स्कूल में पढ़ाना पसंद करते थे, क्योंकि वह प्राइवेट स्कूल को सरकारी स्कूल से बेहतर समझते थे। लेकिन हमारी पूर्ववर्ती और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने तय किया कि प्रदेश के बच्चों को बेहतर से बेहतर शिक्षा देंगे। शासकीय स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों को बेहतर शिक्षा, बेहतर माहौल, अच्छा कैंपस, मोटिवेशन क्लास मिले। हम इसी दिशा में कार्य कर रहे है। श्री सिंह ने कहा कि नई शिक्षा नीति प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का बेहतर शिक्षा को लेकर भविष्य का सपना है। यह इस दिशा में किया गया एक दूरदर्शी प्रयास है, जिसके परिणाम हमें शीघ्र ही दिखाई देंगे।प्रदेश के सीएम राइज स्कूल किसी प्राइवेट स्कूल से कम नहीं होंगे, आधुनिक संसाधन इस सीएम राइज स्कूल में मिले, यह हमारी सरकार ने सुनिश्चित किया।

स्वस्थ और संतुलित जीवनशैली का प्रतीक है योग - उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने योग को विश्व स्तर पर पहचान दिलाने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं और इसे प्रत्येक व्यक्ति की जीवनशैली का अभिन्न हिस्सा बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। उप मुख्यमंत्री ने आह्वान किया है कि सभी नागरिक अपने जीवन में योग को अपनाकर स्वस्थ और खुशहाल जीवन की ओर कदम बढ़ाएं। उन्होंने महर्षि पतंजलि के योगसूत्र का उद्धरण देते हुए कहा है कि योग= चित्तवृत्ति निरोध=। अर्थात, योग चित्त की वृत्तियों का निरोध है। मानसिक शांति और स्थिरता प्राप्त करने में सहायक है। यह अत्यंत गर्व का विषय है कि योग, जो हमारे ऋषियों की अनमोल देन है, आज पूरे विश्व में स्वस्थ और संतुलित जीवनशैली का प्रतीक बन चुका है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने प्रदेशवासियों से अपील की है कि योग को अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बनाएं। योग न केवल हमारे शरीर को स्वस्थ रखता है, बल्कि हमारे मन और आत्मा को भी शांति और संतुलन प्रदान करता है। इसे आप अकेले या अपने परिवार के साथ मिलकर कर सकते हैं। उप मुख्यमंत्री ने माता-पिता, अभिभावकों और युवाओं से आग्रह किया है कि वे अपने बच्चों छोटे भाई बहनों को प्रारंभिक आयु से ही योग का महत्व सिखाएं और उन्हें इसे अपने जीवन में अपनाने के लिए प्रेरित करें। इससे न केवल उनका शारीरिक विकास होगा, बल्कि मानसिक विकास भी सुचारू रूप से होगा। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि इस वर्ष योग दिवस की थीम स्वयं और समाज के लिए योग यह संदेश देती है कि योग केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य के लिए नहीं, बल्कि संपूर्ण समाज के कल्याण के लिए महत्वपूर्ण है।

प्रदेश में विमुक्त घुमन्तु और अर्द्धघुमन्तु कल्याण के कार्यों की केन्द्रीय बोर्ड के सदस्य पटनी ने की सराहना

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रदेश में विमुक्त घुमन्तु और अर्द्धघुमन्तु कल्याण के लिये किये जा रहे कार्यों की केन्द्रिय सरकार के विमुक्त घुमन्तु और अर्द्धघुमन्तु समुदायों के विकास एवं कल्याण बोर्ड के सदस्य श्री भरतभाई बाबूभाई पटनी ने सराहना की। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश पहला राज्य है जिसके द्वारा विमुक्त घुमन्तु और अर्द्धघुमन्तु के विकास और कल्याण के लिये पृथक विभाग के माध्यम से कार्य किया जा रहा है। श्री पटनी गुरूवार को मंत्रालय में पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक, विमुक्त घुमन्तु और अर्द्धघुमन्तु कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर के साथ विमुक्त घुमन्तु और अर्द्धघुमन्तु समुदायों के विकास और कल्याण के लिये राज्य सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों पर चर्चा कर रहे थे। केन्द्रीय बोर्ड के सदस्य श्री पटनी ने कहा कि मध्यप्रदेश में विमुक्त घुमन्तु और अर्द्धघुमन्तु समुदायों के विकास और कल्याण के लिये कार्यक्रमों और योजनाओं का बेहतर क्रियान्वयन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि राज्य मंत्री श्रीमती गौर द्वारा योजनाओं के क्रियान्वयन में बोर्ड से सहयोग की अपेक्षा की गई है। बोर्ड द्वारा राज्य सरकार को योजनाओं के क्रियान्वयन के लिये जरूरी राशि उपलब्ध कराई जायेगी। अपर मुख्य सचिव विमुक्त घुमन्तु और अर्द्धघुमन्तु श्री अजित केसरी ने विभाग द्वारा किये जा रहे विभिन्न कार्यों की जानकारी दी। बैठक में संचालक विमुक्त घुमन्तु और अर्द्धघुमन्तु विभाग श्री नीरज वशिष्ठ भी उपस्थित थे।

मानव स्वास्थ्य में पशु स्वास्थ्य का अहम योगदान

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मानव स्वास्थ्य में पशु स्वास्थ्य का अहम योगदान है। पशु पक्षियों का स्वास्थ्य बिगड़ने पर इसका प्रतिकूल प्रभाव मानव पर भी पड़ता है। मानव स्वास्थ्य के क्षेत्र में तो हर रोग के लिए विशेषज्ञ है, परंतु पशु स्वास्थ्य का दायरा सीमित है। जितना ध्यान मानव स्वास्थ्य पर दिया जा रहा है उतना ही पशु स्वास्थ्य एवं पर्यावरण स्वास्थ्य के प्रति भी सजगता होनी चाहिए, तभी हम समग्र स्वास्थ्य की बात कर सकते हैं। वाइल्डलाइफ हेल्थ पर भी पूरा ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। बर्ड फ्लू (एवियन इन्फ्लूएंजा) पर 2 दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला में ये विचार भारत सरकार के पशुपालन आयुक्त श्री अभिजीत मिश्रा ने व्यक्त किए। प्रमुख सचिव, पशुपालन एवं डेयरी विभाग, श्री गुलशन बामरा ने कहा कि अभी पशु चिकित्सा के क्षेत्र में काफी चुनौतियां हैं, जिन्हें हमें दूर करना है। वर्ल्ड बैंक और भारत सरकार पशुपालन एवं डेयरी विभाग द्वारा एक बेहद सार्थक संगोष्ठी एवं पर परिचर्चा आयोजित की गई है, जिसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। इस वैज्ञानिक परिचर्चा के निष्कर्ष निश्चित रूप से पशु स्वास्थ्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण साबित होंगे। पी. सी. सी. एफ., वाइल्ड लाइफ डॉ. अतुल श्रीवास्तव ने कहा कि पशुओं का इलाज बेहद चुनौती पूर्ण है। मनुष्य तो अपनी बीमारी और परेशानी बता सकता है लेकिन पशुओं के लक्षण देखकर ही बीमार का इलाज करना होता है। उन्होंने पशुओं के पंजीयन की भी आवश्यकता बताई। कार्यशाला में वर्ल्ड बैंक की वरिष्ठ कृषि अर्थशास्त्री डॉक्टर हीकूईपी, प्रमुख वैज्ञानिक डॉक्टर चंद्रधर तोष ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यशाला में बर्ड फ्लू से संबंधित वैज्ञानिक परिचर्चा की गई। साथ ही पशुओं में होने वाली अन्य नई बीमारियों और जुनेटिक डिजीज के परिपेक्ष में भी वन हेल्थ के विषय पर गहन चर्चा की गई। कार्यशाला का आयोजन वर्ल्ड बैंक और पशुपालन एवं डेयरी विभाग के संयुक्त तत्वावधान में किया जा रहा है। क

र्यशाला में असम, उड़ीसा, कर्नाटक, केरल, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, दिल्ली आदि राज्यों के पशु विशेषज्ञ एवं वाइल्ड लाइफ विशेषज्ञ उपस्थित हुए। वर्ल्ड बैंक के विशेषज्ञ, राष्ट्रीय उच्च सुरक्षा पशु रोग अनुसंधान प्रयोगशाला के वरिष्ठ वैज्ञानिक, राज्यों के पशुपालन एवं डेयरी विभाग एवं स्वास्थ्य विभाग अधिकारी, राष्ट्रीय स्तर की स्वास्थ्य संस्थानों के अधिकारी, वन विभाग तथा वन्य प्राणी विभाग से संबंधित अधिकारी तथा अन्य रोग अनुसंधान प्रयोगशालाओं के अधिकारी आदि शामिल हुए।

नगर में तीसरी ऑख का अभाव, घटना के बाद अपराधी हो जाते हैं फरार

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। शहर में आपराधिक गतिविधियों पर नजर रखने के लिए सीसीटीव्ही कैमरे निगहबानी करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। नगर पालिका क्षेत्र अंतर्गत आए दिन बाइक चोरी तथा मारपीट, लूटपाट की घटनाएं संज्ञान में आती रहती हैं। जरूरत के हिसाब से मिनी स्मार्ट सिटी में आज दिनांक तक तीसरी ऑख का पहरा नही लगाया जा सका है। वहीं इसकी पूर्ति के लिये लगातार विभागीय तौर पर पत्र जारी कर कमी की पूर्ति के लिये ध्यान आकर्षण किया जाता रहा है। वहीं अब एक बार फिर स्थानीय स्तर पर नगर में मुख्य चौराहों एवं बाजार क्षेत्र में

लगभग एक सैकड़ा से ज्यादा कैमरे लगाने की आवश्यकता पर जोर दिया जा रहा है। जिससे अपराध घटित करने वाले आरोपियों की पहचान हो सके साथ ही पीड़ित को न्याय मिल सके।

आपको बताते चलें कि जिला चिकित्सालय सीधी एवं कलेक्ट्रेट सहित बाजार क्षेत्र से बाइक की चोरी होना अब आम बात हो चली है उसके बाद भी जिला प्रशासन द्वारा सम्राट चौक, अस्पताल चौक, कलेक्ट्रेट तिराहा सहित बाजार क्षेत्र में पूरी तरह से कैमरे नही लगवाये जा सके हैं। जिन स्थलो पर पहले से कैमरे लगे हुए हैं, वे गुणवत्ता विहीन हैं। इन कैमरों में घटना के बाद अपराधियों की शक्ल स्पस्ट नहीं आती है लेकिन उनकी गतिविधियां जरूर कैद हो जाती हैं। जिससे पुलिस चाह कर भी आसानी से अपराधियों तक नही पहुंच पा रही है।

इनका कहना है -

शहर की सुरक्षा के लिये राज्य शासन के निर्देशन में जल्द ही नगर में सीसीटीव्ही कैमरे जरूरत

के हिसाब से लगवाने की पहल प्रारंभ की जायेगी।

डॉ. महेन्द्र सिंह सिकरवार, पुलिस महानिरीक्षक रीवा जोन रीवा।

खुले बाजार में आज आयोजित होगा पुस्तक मेला

पुस्तके, यूनीफार्म, कॉपी, स्टेशनरी इत्यादि सस्ते दर पर होगी मुहैया : जिला शिक्षा अधिकारी

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। जिला शिक्षा अधिकारी डॉ.प्रेमलाल मिश्रा ने बताया कि नवीन शैक्षणिक सत्र 2024-25 1 अप्रैल 2024 से शुरू होने से प्रदेश के सभी शासकीय एवं निजी विद्यालयों में नवीन सत्र के लिये पठन-पाठन प्रारम्भ हो गया है। निजी विद्यालयों के लिये स्कूल शिक्षा विभाग का म.प्र. निजी विद्यालय अधिनियम 2017 एवं म.प्र. निजी विद्यालय नियम 2020 प्रभावशील है। जिसमें प्रावधान है कि निजी विद्यालय प्रबंधन द्वारा छात्र या अभिभावकों को पुस्तकें, यूनीफार्म, टाई, जूते, कॉपी आदि केवल चयनित विक्रेताओं से क्रय करने के लिये औपचारिक अथवा अनौपचारिक, किसी भी रूप में बाध्य नहीं किया जायेगा। छात्र या अभिभावक इन सामग्रियों को खुले बाजार से क्रय करने के लिये स्वतन्त्र होंगे।

आपको बताते चलें कि अधिनियम 2017 तथा नियम 2020 के प्रावधानों का सम्यक रूप से पालन में पुस्तक मेले का आयोजन सहायक होगा। जिला स्तरीय दो दिवसीय पुस्तक मेला का आयोजन 21 एवं 22 जून 2024 को शा.उ.मा.वि. क्रमांक-2 सीधी सायं 3 बजे से आयोजित है जिसमें पुस्तकें, स्टेशनरी, यूनीफार्म, आदि के स्टाल स्थानीय प्रकाशकों एवं विक्रेताओं द्वारा लगाये जायेंगे।जिला शिक्षा अधिकारी सीधी ने जिले के सभी प्राचार्य, प्रधानाध्यापक एवं संचालकों को पत्र लिखकर विद्यार्थियों एवं अभिभावकों को पुस्तक मेला के आयोजन की सूचना एवं पुस्तक मेला का लाभ उठाने हेतु अवगत कराने हेतु पत्र जारी किया है। जिला शिक्षा अधिकारी ने जिले के समस्त पुस्तक विक्रेता, गणवेश विक्रेता, जूता टाई विक्रेताओं को भी पत्र जारी कर अपने स्टाल लगाने हेतु लेख किया है।

अजय सिंह को सौंपी जाए प्रदेश कांग्रेस की कमान : आकाश राज पाण्डेय

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। जिला कांग्रेस कमेटी के प्रवक्ता आकाश राज पांडे ने विज्ञप्ति माध्यम से कहा कि मध्य प्रदेश में कांग्रेस तभी मजबूत होगी जब प्रदेश कांग्रेस की कमान पूर्व नेता प्रतिपक्ष अजय सिंह राहुल भैया को सौंपी जाएगी। म.प्र. में विगत विधानसभा एवं लोकसभा के चुनाव में कांग्रेस के प्रदर्शन और मजबूत नेतृत्व के अभाव में कांग्रेस कार्यकर्ताओं का मनोबल टूट चुका है। ऐसे में प्रदेश को मजबूत एवं अनुभवी नेतृत्व की आवश्यकता है। वर्तमान समय को देखते हुए पूर्व नेता प्रतिपक्ष अजय सिंह राहुल को मध्य प्रदेश कांग्रेस की कमान सौंपी जानी चाहिए पूर्व नेता प्रतिपक्ष चुरहट विधायक अजय सिंह राहुल का पूरे प्रदेश के कार्यकर्ताओं में अच्छी पकड़ है और उनके अनुभव से प्रदेश कांग्रेस मजबूत

होगी। कांग्रेस को वही मजबूत नेतृत्व देकर पुन: प्रदेश में कार्यकर्ताओं के अंदर उत्साह और ऊर्जा भर सकते हैं, विगत विधानसभा के चुनाव और लोकसभा के चुनाव में प्रदेश नेतृत्व का कार्यकर्ताओं से सीधा संवाद और जुड़ाव ना होने के कारण कांग्रेस बहुत पीछे गई। कार्यकर्ता पूरी तरह से हतोत्साहित हो गए जबकि 2018 के विधानसभा के चुनावों में जब पूर्व नेता प्रतिपक्ष अजय सिंह राहुल और अरुण यादव के नेतृत्व में चुनाव लड़ा गया था तब मध्य प्रदेश में कांग्रेस की सरकार बनी थी लेकिन तब के कांग्रेस के मुखिया प्रदेश में कांग्रेस की सरकार को नहीं संभाल सके और सरकार गिर गई आज एक बार फिर सशक्त नेतृत्व की आवश्यकता है और वह नेतृत्व अजय सिंह राहुल प्रदान कर सकते हैं।

डॉ.रविन्द्र वर्मा की तत्परता से फरीयादी के खाते में वापस आई ठगी की राशि

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। डॉ.रविंद्र वर्मा पुलिस अधीक्षक के निर्देशन एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अरविन्द श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में सायबर सेल की टीम ने फरियादी के खाते में वापस कराये ठगी के 13500 रुपये। बताया गया कि 14 जून को फरियादी प्रवीण कुमार पाण्डेय पिता शंकर प्रसाद पाण्डेय ग्राम दोहा पोस्ट दोहा थाना बैकुंठपुर जिला रीवा वर्तमान पता सीधी ने पुलिस को आवेदन दिया कि आज सुबह मेरे मोबाइल में एक वीडियो कॉल आया जिसमें अज्ञात व्यक्ति द्वारा मेरी वीडियो रिकार्डिंग कर ब्लैकमेल करने लगी। वीडियो न

वायरल करने के लिये 13500 रुपये अपने खाते में डलवा लिये और पैसे की मांग कर रहा है। आवेदन पत्र की गंभीरता को देखते हुये सायबर सेल टीम द्वारा पुलिस अधीक्षक को सूचित कर तत्काल कार्यवाही करते हुये फरियादी से ट्रांजेक्शन डिटेल प्राप्त कर संबंधित वॉलेट पेमेन्ट बैंक नोडल को भेजा जाकर खाते से आहरित राशि को वापस करने व संबंधित खातों को फ्रीज करने का अनुरोध किया गया। संबंधित वॉलेट पेमेन्ट बैंक नोडल द्वारा तत्काल खातों को फ्रीज कर संबंधित ट्रांजेक्शन की राशि पुन: फरियादी के खाते में भेजी गयी जो राशि फरियादी के खाते में क्रेडिट हो चुकी है। शिकायत पत्र के अन्य तथ्यों की जाँच जारी है।

आमजनो से अपील -

सायबर सेल सीधी सभी नागरिको से अपील करते हुए कहा गया कि आप अपने खातें से संबंधित जानकारी किसी भी व्यक्ति के साथ साझा न करे और ना ही किसी अंजान लिंक पर क्लीक करें एवं अंजान वीडियो कॉल रिसीव न करें अन्यथा आप भी ठगी के शिकार हो सकतें है।

क्रीड़ा भारती इकाई की बैठक आयोजित

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। बुधवार को अक्षत होटल मे क्रीड़ा भारती सीधी के अध्यक्ष डॉ.अनूप मिश्रा के मुख्य आतिथ्य में आवश्यक बैठक आहुत कर बताया गया कि 14 जून को प्रांतीय कार्यकारणी के द्वारा गूगल मीट के माध्यम से जिला इकाई को विभिन्न दायित्व निर्वहन हेतु निर्देशित किया गया है। जिसके तहत आगामी दिनों मे योग दिवस, सदस्यता अभियान, ग्रामीण क्रीड़ा केंद्र का विस्तार, प्रतिमाह बैठक के आयोजन एवं खेल दिवस आयोजन को लेकर चर्चा एवं 26 जून को होने वाली जबलपुर में प्रांतीय वार्षिक कार्ययोजना बैठक के आयोजन में जिले से सहभागिता के लिए भी चर्चा की गई।

बैठक मे मुख्यरूप से मौजूद क्रीड़ा भारती सीधी के अध्यक्ष डॉ अनूप मिश्रा द्वारा सुझाव दिया गया कि खेल के आयोजनो को ग्रामींण स्तर पर विशेष तौर पर आयोजित करना है। जिसके लिये खेल के मैदान एवं खेल सामग्री जन सहयोग से खिलाड़ियो को आवश्यकतानुसार मुहैया कराने पर जोर दिया गया। जिले के प्रतिभावान खिलाड़ियों को तरास कर देश व विश्व के पटल तक पहुँचाना है। बैठक मे मुख्य रूप से राजबहोरन सिंह विभाग संयोजक सिंगरौली विभाग, राममणि त्रिपाठी जिला संयोजक क्रीड़ा भारती, हरिशंकर पांडेय जिला प्रभारी क्रीड़ा अधिकारी, श्रवण शुक्ला आदर्श योग क्लब प्रभारी, सूरज विश्वकर्मा जिला योग प्रभारी, रविंद्र सिंह. क्रीड़ा अधिकारी संजय गाँधी महाविद्यालय, देवेंद्र सिंह, अनिल कुमार शुक्ला प्रशिक्षक वालीबाल, केपी सिंह, मानिंद शेरअली खान खेल प्रशिक्षक, सूरज शुक्ला बॉक्सिंग प्रशिक्षक, दिवाकर सिंह प्रशिक्षक फुटबॉल, माखनलाल मिश्रा पीटीआई, रोशनलाल जायसवाल सचिव एथलेटिक्स संघ, विवेक सिंह राष्ट्रीय कबड्डी खिलाड़ी मौजूद रहे। कार्यक्रम का सफल संचालन राममणि त्रिपाठी एवं आभार राजबहोरन सिंह के द्वारा किया गया।

विधायक ने जिला चिकित्सालय का किया औचक निरीक्षण, लगाई फटकार

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। गुरूवार को विधायक रीती पाठक जिला चिकित्सालय में मूलभूत सुविधाओं का औचक निरीक्षण कर वार्ड में भर्ती मरीजों से चिकित्सा सुविधाओं के विषय में सीधे जानकारी ली। मरीजों से पूछा कि उन्हें अस्पताल से दवाएं मिलती हैं या नहीं और ड्यूटी पर तैनात डॉक्टर मरीजों को देखते हैं या नहीं। निरीक्षण के दौरान ड्यूटी रजिस्टर, एनसीआर वार्ड, पीएनसी वार्ड, प्री डिलीवरी वार्ड, ओटी कक्ष, हीट बेब वार्ड निरीक्षण कर उपस्थित मरीजों से वार्तालाप किया एवं खानपान के बारे में जानकारी लिए। कर्मचारियों को ड्रेस कोड में रहने आदि के सम्बंध में निर्माण कार्य एवं मरीजों को बेहतर इलाज व सुविधाएं उपलब्ध कराने हेतु अस्पताल के वार्डों का सघन निरीक्षण करते हुए साफसफाई एवं दवाओं की उपलब्धता को देखा एवं चिकित्सा प्रणाली को बेहतर से बेहतर बनाने के सम्बंधित को आवश्यक दिशा.निर्देश दिए गयें वहीं लचर व्यवस्थाओं पर नाराजगी जताते हुए फटकार भी लगाई गयी।

इस दौरान विश्वबंधु धर द्विवेदी, सुधीर शुक्ला, रविचन्द सिंह, बद्री मिश्रा, पुष्पराज सिंह, शुभम जायसवाल, प्रमोद जायसवाल, अमन पाठक, रोशन वर्मा, कलेक्टर, अपर कलेक्टर, डॉक्टर जिला प्रशासन अधिकारी उपस्थित रहें।

कुसमी पुलिस ने 88 हजार रूपये का 5 किलो गांजा एवं मोटर सायकल को किया जप्त

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। पुलिस अधीक्षक डॉ.रविन्द्र वर्मा के निर्देशन व अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अरविंद श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में अवैध नशे के विरूद्ध सीधी पुलिस द्वारा लगातार कार्यवाही की जा रही है। इसी तारतम्य में कार्यवाही करते हुये कुसमी पुलिस द्वारा 52 हजार रूपये कीमती 5.2 किलोग्राम गांजा एवं परिवहन में प्रयुक्त मोटर सायकल कीमती 30 हजार के साथ आरोपी को कुसमी पुलिस ने गिरफ्तार किया है।

कुसमी पुलिस से मिली जानकारी के आधार पर बताया गया कि पुलिस अधीक्षक सीधी डॉ रविन्द्र वर्मा द्वारा अवैध मादक पदार्थ के विक्रय परिवहन एवं भण्डारण के उपर कार्यवाही करने के निर्देश दिये गये हैं। जिस तारतम्य में 20 जून 2024 को थाना कुसमी को जरियें मुखविर सूचना मिली कि थाना क्षेत्र मे रात्रि गस्त किया, बाद क्षेत्र भ्रमण दौरान कुसमी बाजार चौराहा मे मुखबिर द्वारा सूचना प्राप्त हुई कि ग्राम गाजर नौढ़िया से जूरी भगवार रोड तरफ से एक व्यक्ति काले रंग की होण्डा साईन मोटरसाइकल जिसका नंबर सिगरौली पासिंग है, से सरई तरफ से भारी मात्रा मे अवैध मादक पदार्थ गांजा लेकर आ रहा है। थाना प्रभारी कुसमी द्वारा मुखविर सूचना से वरिष्ट अधिकारियों को अवगत कराते हुये स्वयं के नेतृत्व में एक टीम गठित कर मुखबिर के बताये स्थान रोड ग्राम जूरी तरफ गये जो भगवार जूरी रोड पुलिया के पास मुखबिर के बताये हुलिया जैसा काले रंग की होण्डा मोटरसाइकल की पेट्रोल टंकी के पास एक झोला रखे एक व्यक्ति मिला जिसे रोककर पूछताछ किया जो अपना नाम नीरज कुमार साहू पिता ज्वाला प्रसाद साहू उम्र 23 वर्ष निवासी पोखरी टोला थाना सरई जिला सिगरौली का होना बताया तथा मोटरसाइकल के टंकी के पास रखे झोला में रखे हुए सामान के सबंध मे पूछा गया। जो संदेहजनक उत्तर दिया जो पास में रखी बोरी की पुलिस टीम द्वारा तलाशी लेने पर अवैध मादक पदार्थ गाजा पाया गया। जिसका तौल करने पर कुल 5.2 किलोग्राम गांजा कीमती 52 हजार रूपये जप्त किया गया। आरोपियो से मोटर सायकल 1 नग जिसकी अनुमानित कीमती 30 हजार, 5500 रुपये नगदी कुल कीमती 87 हजार 500 रूपये की जप्ती बनाया गया है। आरोपियों का उक्त कृत्य एनडीपीएस की धारा 8/20बी के तहत दंडनीय पाए जाने पर थाना कुसमी में अपराध कायम कर आरोपी को गिरफ्तार कर विवेचना में लिया गया है।

सराहनीय योगदान:- थाना प्रभारी कुसमी उनि भूपेश बैस, सउनि नन्दप्रकाश सिंह, प्रआर अंजनी कुमार द्विवेदी, बलवीर नीखरे, कमलेश प्रजापति, आरक्षक दिनेश सिंह, दिनकर दुबे, अभिमन्यु सिंह की अहम भूमिका रही है।

कलेक्टर ने चार पटवारियों को जारी किया कारण बताओ नोटिस

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी को प्राप्त शिकायतो के आधार पर उपखण्ड अधिकारी गोपद बनास द्वारा चार पटवारियों को कारण बताओ सूचना पत्र जारी किया गया है। कलेक्टर सोमवंशी ने कड़े निर्देश दिए हैं कि अपने जायज कार्यों के लिए यदि लोगों को अनावश्यक परेशान होते पाया गया तो संबंधित अधिकारी एवं कर्मचारियों के विरुद्ध कठोर अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाएगी। सभी अधिकारी/कर्मचारी अपने निर्धारित दिवसों पर कार्यालय में उपस्थित रहेंगे तथा नागरिकों की समस्याओं का तत्परता से निराकरण सुनिश्चित करेंगे। लोगों को सहजता से शासन की सेवाओं एवं सुविधाओं का लाभ मिलना सुनिश्चित करें।

उपखण्ड अधिकारी गोपद बनास नीलेश शर्मा ने अविनाश पाण्डोरिया पटवारी हल्का बरम्बाबा, विद्यावती कुशवाहा पटवारी हल्का चौफाल कोठार, सीमा प्रजापति पटवारी हल्का बघवारी एवं पंकज सिंह पटवारी हल्का बेन्दुआ को कारण बताओ सूचना पत्र जारी किया है। उन्होने बताया कि जन सुनवाई में प्राप्त आवेदन अनुसार अविनाश पाण्डोरिया पटवारी हल्का बरम्बाबा द्वारा बंटवारा प्रतिवेदन नहीं दिए जाने, विद्यावती कुशवाहा पटवारी हल्का चौफाल कोठार द्वारा राहत राशि का प्रकरण नहीं बनाने, सीमा प्रजापति पटवारी हल्का बघवारी द्वारा सीमांकन में हेरा-फेरी एवं नक्शें से बटांकन विलोपित करने एवं पंकज सिंह पटवारी हल्का बेन्दुआ द्वारा इत्यलाबी नहीं करने के कारण घोर लापरवाही को देखते हुए उन्हे कारण बताओ सूचना पत्र जारी किया गया है। शासकीय कार्य में घोर लापरवाही एवं स्वेच्छाचरिता को देखते हुए दो दिवस में जवाब प्रस्तुत करने के निर्देश दिए गए हैं।

नेता के लिये नहीं पार्टी के लिये करें निष्ठा पूर्वक कार्य : डॉ.राजेश

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं लोकसभा संसदीय क्षेत्र के सांसद डॉ.राजेश मिश्रा ने नगर मंडल की कामकाजी बैठक में बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित रहकर मंडल अध्यक्ष मुनिराज विश्वकर्मा की अध्यक्षता में जिला उपाध्यक्ष प्रमोद द्विवेदी, वरिष्ठ भाजपा नेता डॉ.देवेन्द्र त्रिपाठी की विशिष्ट उपस्थिति में कहा कि भारतीय जनता पार्टी का कार्यकर्ता नेता के लिये नहीं पार्टी के लिये निष्ठापूर्वक कार्य करता है।

टीम भावना से करें कार्य:

लोकसभा संसदीय क्षेत्र के नवनिर्वाचित सांसद डॉ.राजेश मिश्रा ने कहा कि पार्टी का कार्यकर्ता टीम भावना से कार्य करता है। मैं सभी विधायकों एवं पार्टी पदाधिकारियों के साथ मिलकर सीधी लोकसभा

संसदीय क्षेत्र के संपूर्ण विकास के लिये परिश्रम की पराकाष्ठा से कार्य करूंगा। लोकसभा संसदीय क्षेत्र के नवनिर्वाचित सांसद ने कहा कि पार्टी द्वारा 21 जून से 6 जुलाई तक विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन करने वाली है। 21 जून को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत के योग को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली। 21 जून को पार्टी के सभी पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता आमजनों के साथ मिलकर इसे करें आयोजित। 23 को भारतीय जनता पार्टी के संस्थापक सदस्य डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान दिवस को बूथ स्तर पर मनाना है। धारा 370 हटाकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने डॉ.मुखर्जी के सपनों को पूरा किया है।

कांग्रेस ने आपातकाल लगाकर की थी संविधान की हत्या:

लोकसभा संसदीय क्षेत्र के नवनिर्वाचित सांसद ने कहा कि 25 जून को तत्कालीन कांग्रेस की इंदिरा गांधी सरकार ने देश में एमरजेंसी लगाकर लोकतंत्र का गला घोंटने का कार्य करते हुये संविधान की हत्या की थी। हम सभी को इस दिन कांग्रेस के अत्याचारों एवं यातनाओं को जन.जन तक पहुंचाना है। इस निमित्त सभी बूथ केन्द्रों पर कार्यक्रम आयोजित करें।

मेरा पल.पल जनता जनार्दन के नाम:

लोकसभा संसदीय क्षेत्र के नवनिर्वाचित सांसद ने कहा कि मैं सांसद के पद पर निर्वाचित होते ही जनता जनार्दन के कल्याण के लिये पल प्रतिपल सजगता से चिंतित हूं और उनके विकास की अपार संभावनाओं पर कार्य कर रहा हूं। दिल्ली पहुंचते ही पहले की दिन रेल मंत्रालय से मिलकर ट्रेन के फेरे बढ़ाये। ललितपुर.सिंगरौली रेलवे परियोजना पर द्रुतगति से कार्य हो इसके लिये लगा हूं। सीधी.सिंगरौली सड़क मार्ग का निर्माण कार्य अविलम्ब पूर्ण हो, इसके लिये संबंधित मंत्रालय से चर्चा कर रहा हूं। सीधी जिला चिकित्सालय का कायाकल्प हो इसके लिये सीएमएचओ एवं अन्य कर्मचारियों से मिलकर आवश्यक कार्यों की लिस्ट बनवा रहा हूं। विंध्य के जाने.माने नेता और उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ला से मिलकर कार्यों को अंतिम रूप देने का प्रयास चल रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव सहित सभी मंत्रियों ने क्षेत्र के समग्र विकास के लिये पूर्ण सहयोग की बात कहीं है।

पार्टी कार्यालय को किया दण्डवत प्रणाम:

लोकसभा संसदीय क्षेत्र के नवनिर्वाचित सांसद मिश्रा ने सांसद बनने के पश्चात पार्टी कार्यालय में प्रथम आगमन पर पार्टी कार्यालय को दंडवत प्रणाम किया और कहा कि पार्टी कार्यालय हमारा मंदिर है। इस मंदिर से जनता के कल्याणकारी कार्य होंगे।

कार्यालय नगर पालिक निगम, रीवा (म.प्र.)

क्रमांक 1872/न.पा.नि./राजस्व/2023-24 रीवा, दिनांक 20/06/2024

अचल सम्पत्ति नामांतरण विज्ञप्ति

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि पूर्व नगर सुधार न्यास रीवा की आवासीय योजना क्रमांक-6 विवेकानन्द नगर रीवा जो नगर पालिक निगम रीवा के स्वामित्व में है, में स्थित भूखण्ड क्रमांक 1/135 कुल क्षेत्रफल 671.42 वर्गफिट श्रीमती सरजू बाई पटेल पति स्व. श्री तुलसी राम पटेल को 30 वर्षीय लीज पर आवंटित है, इनकी मृत्यु पश्चात, इस भूखण्ड का नामान्तरण श्री के. आर. पटेल पिता स्व. श्री तुलसीराम पटेल निवासी वार्ड 25 पी.टी.एस. चौराहा व्यंकट बटालियन रीवा मध्यप्रदेश के नाम किये जाने हेतु दिनांक 05.10.2023 को आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है। उक्त भूखण्ड क्रमांक 1/135 के नामांतरण में किसी व्यक्ति/संस्था को कोई आपत्ति हो, तो समाचार पत्रों में इस विज्ञप्ति के प्रकाशन के 15 दिवस की अवधि तक कार्यालय नगर पालिक निगम रीवा में प्रमाणित अभिलेखों के साथ उपस्थित होकर लिखित में अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित समयावधि के पश्चात कोई आवेदन/आपत्ति न तो ग्रहण की जावेगी और न ही मान्य की जावेगी। तत्पश्चात आवेदक के आवेदन अनुसार उक्त भूखण्ड क्रमांक 1/135 का नामांतरण श्री के.आर. पटेल पिता स्व. श्री तुलसीराम पटेल निवासी वार्ड 25 पी.टी.एस. चौराहा व्यंकट बटालियन रीवा मध्यप्रदेश के नाम करने की कार्यवाही की जावेगी।

उपायुक्त (राजस्व)
नगर पालिक निगम रीवा (म.प्र.)

विचार

कितने जायज हैं ईवीएम पर विपक्ष के सवाल?

देश में प्रायः हर उस चुनाव के बाद विद्युतीय मतदान मशीन पर सवाल उठते रहे हैं, ज़ब किसी भी विपक्ष की सरकार नहीं बन पाती। इस बार भी लोकसभा चुनाव के बाद देर से ही सही, लेकिन ईवीएम पर सवाल उठने लगे हैं। हालांकि अभी स्वर इसलिए भी धीमे हैं, क्योंकि लोकसभा चुनाव में विपक्ष के राजनीतिक दलों ने अपनी ताकत बढ़ाकर एक मजबूत विपक्ष बनने का रास्ता तैयार कर लिया है। देश के राजनीतिक इतिहास में ऐसा दृश्य पहली बार दिख रहा है, ज़ब विपक्ष सरकार बनाने से दूर रहकर भी अपनी विजय का अहसास करा रहा है। इसके विपरीत सत्ता पाने वाले राजग इस बात की समीक्षा कर रहा है कि उसकी सीटें कम कैसे हो गईं। जबकि यह समीक्षा विपक्षी दलों को करना चाहिए। खैरज बात हो रही थी ईवीएम की। इस लोकसभा चुनाव से पूर्व भी भाजपा के नेतृत्व में दो बार केंद्र में सरकार बनी, तब भी विपक्ष का यही मानना था कि ईवीएम की गड़बड़ी के कारण ही भाजपा ने विजय प्राप्त की है। हालांकि इन दस वर्षों के दौरान कई बार ऐसे चुनाव परिणाम भी आए हैं, जिसमें भाजपा को हार का सामना करना पड़ा। लेकिन विसंगति यही है कि इसके बाद विपक्ष की ओर से ईवीएम पर कोई सवाल नहीं उठाए गए। ऐसी स्थिति में यही कहा जा सकता है कि विपक्ष की ओर से स्थिति देखकर ही सवाल उठाए जाते हैं। विपक्षी राजनीतिक दलों को ऐसा ही लगता है कि भाजपा के पास कोई जनाधार नहीं है, वे मात्र ईवीएम के सहारे ही जीतते हैं। जबकि विपक्ष के किसी राजनीतिक दल को किसी राज्य में सत्ता प्राप्त हो जाए तो फिर ईवीएम पर सवाल नहीं उठाए जाते। हम जानते हैं कि विपक्ष को केवल भाजपा की जीत से परहेज है, वे भाजपा की जीत को पचा नहीं पाते, जबकि दिल्ली और पंजाब में आम आदमी पार्टी को छप्पर फाड़ समर्थन मिला था, लेकिन तब ईवीएम पर कोई सवाल नहीं उठा। हमें स्मरण होगा कि सन 2014 के लोकसभा चुनाव परिणाम के बाद विपक्षी दलों के अधिकतर नेताओं ने एक स्वर में ईवीएम पर सवाल खड़े किए थे। तब इन सवालों का जवाब देने के लिए चुनाव आयोग ने सारे राजनीतिक दलों को बुलाया था कि ईवीएम को कोई हैक करके दिखाए। लेकिन उस समय ज्यादा विरोध करने वाले कोई भी राजनेता चुनाव आयोग के बुलावे पर नहीं पहुंचे। इसका तात्पर्य यही है कि विपक्ष के ईवीएम पर आरोप का कोई पुष्ट आधार नहीं है। इस बार भी केवल आशंका के आधार पर ईवीएम को निशाने पर लाने की कोशिश की जाने लगी है। चुनाव परिणाम के बाद इस बात की पूरी संभावना बन रही थी कि इस बार ईवीएम को आड़े हाथ लिया जाएगा। इसलिए चुनाव आयोग ने भी ईवीएम को लेकर उत्पन्न होने वाले भ्रम को दूर करने का प्रयास किया। लेकिन इतना होने के बाद भी यह भ्रम दूर नहीं हो सका और ईवीएम पर आरोप लगने शुरू हो गए हैं। यह विवाद कितनी दूर तक जाएगा, यह तो कहना मुश्किल है, लेकिन ज़ब धुंआ उठने लगा है तो आग भी कहीं न कहीं लगी ही होगी। अब विपक्ष के निशाने पर चुनाव आयोग और ईवीएम दोनों ही हैं। विपक्ष की ओर से यह कई बार कहा गया कि चुनाव आयोग केंद्र सरकार के संकेत पर कार्य करता है। वास्तविकता यह है कि चुनाव आयोग एक स्वायत्त संस्था है, जिस पर न तो किसी सरकार का कोई प्रभाव रहता है और न ही किसी राजनीतिक दल का। फिर भी चुनाव आयोग को क्यों विवाद में घसीटा जाता है। यहां यह भी बताना बहुत महत्वपूर्ण है कि अगर विदेश का कोई व्यक्ति या संस्था भारत के बारे में कोई सवाल उठाता है तो हमारे देश के कुछ लोग उस पर आँख बंद करके विश्वास कर लेते हैं, जबकि हमारे देश के संस्थान केवल सफाई देते रहते हैं। अभी हाल ही में एलन मास्क द्वारा यह कहकर सनसनी फैलाने का ही काम किया है कि ईवीएम हैक हो सकती है। एलन मास्क ने यह बयान क्यों दिया, यह तो वही जानें, लेकिन विदेश के लोगों द्वारा भारत के बारे में ऐसे विवादित बयान कई बार दिए जा चुके हैं, जिसको आधार बनाकर भारत की राजनीति को प्रभावित करने का प्रयास किया गया। पाकिस्तान की तरफ से तो मोदी सरकार को सत्ता से हटाने के लिए एक अभियान सा चलता दिखाई दिया

परीक्षा पे चर्चा करने वाले प्रधानमंत्री पेपर लीक मुद्दे पर मंत्रियों और अधिकारियों से चर्चा क्यों नहीं करते?

नीरज कुमार दुबे

एक के बाद एक लीक होती परीक्षाओं के चलते देशभर में छात्रों और अभिभावकों का गुस्सा उबाल ले रहा है। सवाल उठ रहा है कि यह कैसा तंत्र है जो प्रश्नपत्रों को लीक होने से नहीं रोक पा रहा है? सवाल उठ रहा है कि प्रश्नपत्र लीक होने पर परीक्षा रद्द कर देने और सीबीआई जांच बिठा देने से ही क्या छात्रों के समय और पैसे की बर्बादी रुक जायेगी? सवाल उठ रहा है कि क्या देश में परिश्रम, योग्यता और प्रतिभा के आधार पर कभी समान अवसर सुनिश्चित हो पाएंगे? हम 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की बात कर रहे हैं और प्रश्नपत्र लीक करने वाले माफियाओं पर नकेल नहीं कस पा रहे हैं?

मंत्रियों की जबान से देखते हैं, सख्त कार्रवाई करेंगे, किसी को बख्शा नहीं जायेगा जैसे बयान सुन सुन कर अब लोग ऊब चुके हैं। बड़े-बड़े एसी कमरों में बैठने वाले मंत्रियों और अधिकारियों को शायद पता नहीं है कि बच्चों को परीक्षा की तैयारी कराने के लिए महंगे-महंगे कोचिंग सेंटरों में भेज कर मोटी फीस और ट्यूशन फीस पर लगने वाला भारी भरकम जीएसटी देते देते अभिभावकों की कमर टूट जाती है, परीक्षा की तैयारी करते करते छात्रों की हालत खराब हो जाती है, बार-बार परीक्षा रद्द होने से छात्रों का समय और भविष्य को लेकर बनाई गई योजनाएं बाधित हो जाती हैं, इस सबसे छात्र अवसाद में आ जाते हैं, लेकिन सरकार सिर्फ सख्त कार्रवाई का आश्वासन देकर चुप्पी साध लेती है? इसके अलावा, पैसे वाले छात्र तो फिर भी अपने हक की लड़ाई के लिए अदालतों तक चले जाते हैं लेकिन बेचारे गरीब छात्र सिर्फ देखते रहे जाते हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं के समय गरीब छात्र किसी तरह यात्रा खर्चे का जुगाड़ कर परीक्षा केंद्र तक आते हैं और जब परीक्षा रद्द हो जाये तो उनके सामने कोई दूसरा रास्ता भी नहीं रहता। दोबारा परीक्षा होने पर परीक्षा शुल्क तक देने के उसके पास पैसे नहीं होते हैं इसलिए कई छात्र तो दोबारा परीक्षा में भाग भी नहीं लेते। यह आश्चर्यजनक स्थिति है कि हम सर्जिकल और एअर स्ट्राइक के माध्यम से दुश्मन को उसके घर में घुस कर मारते हैं लेकिन अपने छात्रों के भविष्य से खिलवाड़ करने वालों को सख्त सजा नहीं दिलवा पा रहे हैं। हम कहते हैं कि ये नया भारत है, कोई छेड़ेगा तो छोड़ेंगे नहीं, लेकिन प्रश्नपत्रों के साथ छेड़छाड़ होती जा रही है और हम कुछ कर नहीं पा रहे? हम आपको बता दें कि मोदी सरकार के आने से पहले तमाम प्रतियोगी परीक्षाओं को आयोजित कराने के लिए विभिन्न संस्थान थे, लेकिन उन सबको एक प्लेटफॉर्म पर लाते हुए राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी की स्थापना कर दी गयी। परन्तु यह एजेंसी अपने आरम्भकाल से ही विवादों में रही है। प्रश्नपत्र लीक होते रहते हैं और अधिकारी हाथ पर हाथ धरे तब तक बैठे रहते हैं जब तक छात्र और अभिभावक सड़कों पर उतर कर हंगामा नहीं करते। सरकार भी पूरे मामले पर तब तक चुप्पी बरतती है जब तक विपक्ष पेपर लीक को बड़ा मुद्दा नहीं बना दे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हर साल छात्रों के साथ परीक्षा पे चर्चा तो करते हैं लेकिन सवाल उठता है कि वह पेपर लीक मुद्दे पर अपने मंत्रियों या अधिकारियों से चर्चा क्यों नहीं करते? बहरहाल, मोदी सरकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति तो ले आई लेकिन आप शिक्षा मंत्रालय के तमाम फैसलों को देखेंगे तो ऐसा प्रतीत होगा कि इस सरकार की कोई शिक्षा नीति है नहीं बस मंत्री और अधिकारी प्रयोग पर प्रयोग किये जा रहे हैं जिसका खामियाजा छात्रों को भुगतना पड़ रहा है। हालिया लोकसभा चुनावों में पहली बार मतदान करने वाले युवाओं ने मोदी सरकार से नाराजगी इसलिए भी जताई है क्योंकि वह पेपर लीक नहीं रोक पा रही है। जहां तक यूजीसी-नेट परीक्षा की बात है तो आपको बता दें कि मेडिकल प्रवेश परीक्षा 'नीट' को लेकर उपजे विवाद के बीच, शिक्षा मंत्रालय ने राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) द्वारा आयोजित यूजीसी-नेट परीक्षा रद्द करने का बुधवार को आदेश दिया और मामले को गहन जांच के लिए सीबीआई को सौंपा गया है। शिक्षा मंत्रालय ने कहा, ''यूजीसी को गृह मंत्रालय के तहत भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (आई4सी) की राष्ट्रीय साइबर अपराध खतरा विश्लेषण इकाई से परीक्षा के संबंध में कुछ सूचनाएं प्राप्त हुई थीं। इन सूचनाओं से प्रथम दृष्टया संकेत मिला है कि उक्त परीक्षा की शुचिता से समझौता किया गया।'' मंत्रालय ने कहा, ''परीक्षा प्रक्रिया में उच्चतम स्तर की पारदर्शिता और शुचिता सुनिश्चित करने के लिए, यह निर्णय लिया गया है कि यूजीसी-नेट जून 2024 की परीक्षा रद्द कर दी जाए।''

तिब्बत को लेकर अमेरिका ने क्यों कर ली चाईना को घेरने की तैयारी?

नीरज कुमार दुबे

अमेरिका ने चीन को घेरने के लिए जो योजना बनाई है उसके तहत उसने तिब्बत को लेकर एक विधेयक पारित कर दिया है। माना जा रहा है कि अमेरिका की इस योजना को भारत का भी समर्थन है और इस आशंका के चलते चीन इस समय परेशान नजर आ रहा है। चीन को डर है कि यदि राष्ट्रपति शी जिनपिंग के हाथ से तिब्बत फिसला तो बड़ी मुश्किल खड़ी हो सकती है इसलिए वह अमेरिका को सीधे-सीधे और भारत को अप्रत्यक्ष रूप से चेतावनी देने में जुट गया है। लेकिन चीन की धमकियों से बेपरवाह नजर आ रहे अमेरिका ने तिब्बत को लेकर जो बड़ा फैसला किया है उस पर आगे बढ़ने के लिए वह अडिग नजर आ रहा है। यदि तिब्बत पर अमेरिकी नीति बदली तो क्षेत्र में इसका बड़ा असर पड़ने की संभावना है। हम आपको बता दें कि अमेरिकी प्रतिनिधि सभा की पूर्व अध्यक्ष नैन्सी पेलोसी और अमेरिकी संसद की विदेश मामलों की समिति के अध्यक्ष माइकल मैककॉल के नेतृत्व में एक शिष्टमंडल तिब्बती आध्यात्मिक गुरु दलाई लामा से मुलाकात करने के लिए हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला पहुंचा तो चीन ने आंखें लाल कर लीं। लेकिन इसकी परवाह किये बिना नैन्सी पेलोसी ने भारत की धरती से चीन को तगड़ी चेतावनी दे डाली। हम आपको याद दिला दें कि 2022 में जब नैन्सी पेलोसी ताइवान के प्रति समर्थन जताने के लिए वहां की यात्रा पर थीं तब भी चीन ने गहरी नाराजगी जताई थी और अब जब पेलोसी तिब्बत के साथ समर्थन जताने के लिए दलाई लामा से मिलने पहुँचीं हैं तब भी चीन आग बबूला हो गया है। हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में दलाई लामा से मुलाकात के बाद नैन्सी पेलोसी ने चीन को कड़े शब्दों में दिए गए संदेश में कहा कि परिवर्तन होने वाला है। उन्होंने कहा कि परम पावन दलाई लामा, ज्ञान, परंपरा, करुणा, आत्मा की पवित्रता और प्रेम के अपने संदेश के साथ लंबे समय तक जीवित रहेंगे और उनकी विरासत हमेशा जीवित रहेगी। लेकिन आप (चीन के राष्ट्रपति) चले जाएंगे और कोई भी आपको किसी भी चीज का श्रेय नहीं देगा। पेलोसी की शी जिनपिंग के लिए आलोचनात्मक टिप्पणी तब आई जब वह चीनी राष्ट्रपति और दलाई लामा की आभा की तुलना कर रही थीं। उन्होंने जोर देकर कहा कि दलाई लामा का संदेश, ज्ञान और करुणा हमेशा बनी रहेगी। दूसरी ओर, यह धरती छोड़ने के बाद उनके (शी के) सभी काम किसी काम के नहीं रहेंगे। हम आपको बता दें कि मैककॉल के अलावा शिष्टमंडल में अमेरिकी संसद के छह और प्रमुख सदस्य शामिल हैं जिनमें- नैन्सी पेलोसी, मैरिएनेट मिलर, ग्रेगरी मीक्स, निकोल मैलियोटैकिस, जिम मैकगवर्न और एमी बेरा शामिल हैं। यह प्रतिनिधिमंडल इसलिए धर्मशाला आया है क्योंकि हाल ही में अमेरिकी संसद ने एक विधेयक पारित किया है जिसमें मूल रूप से कहा गया है कि अमेरिका, तिब्बत के लोगों के साथ खड़ा है। माना जा रहा है कि इस प्रतिनिधिमंडल की रिपोर्ट के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन विधेयक पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। हम आपको यह भी बता दें कि पेलोसी ने इस विधेयक के बारे में कहा है कि यह चीनी सरकार के लिए एक संदेश है कि इस मुद्दे पर हमारी सोच और समझ में स्पष्टता है।

हम आपको बता दें कि माइकल मैककॉल के नेतृत्व में अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल मंगलवार को हिमालयी शहर धर्मशाला पहुंचा था, जहां दलाई लामा 1960 के दशक से रह रहे हैं। प्रतिनिधिमंडल ने तिब्बत के लिए स्वायत्तता पर जोर दे रही निर्वासित तिब्बती सरकार के कार्यालयों का दौरा किया और फिर दलाई लामा से मुलाकात की। मैककॉल ने बाद में मीडिया को बताया कि चीनी अधिकारियों ने हमारे प्रतिनिधिमंडल को एक पत्र भेजा था जिसमें हमें यहां नहीं आने की चेतावनी दी गई थी। उन्होंने कहा कि लेकिन अमेरिका तिब्बत के आत्मनिर्णय के अधिकार के मामले में उसके साथ खड़ा है।

योग को न जोड़ें व्यवसाय और राजनीति से?

डॉ. रमेश ठाकुर

योग की आड़ में देश के भीतर बड़ा धंधा पनप गया है। महानगरों से लेकर कस्बों-गांवों में भी बड़े-बड़े इंस्टीट्यूट, प्रशिक्षण केंद्र, योग टीचरों की फौज तैयार हो गई है। योग पर किसी का पेटेंट नहीं होना चाहिए और न ही कोई इसकी किसी को ठेकेदारी करनी चाहिए। योग शरीर को चंगा रखने का मजबूत हथियार है और सदैव रहेगा। देखकर दुख होता है जब योग का शारीरिक जरूरतों से कहीं ज्यादा मौजूदा समय में उसका व्यावसायिक, धार्मिक और सियासत में इस्तेमाल होता है। योग को मात्र स्वस्थ काया तक ही सीमित रखना चाहिए। उसकी आड़ में राजनीतिक जरूरतें पूरी नहीं करनी चाहिए। योग गुरू कहलाकर समूचे संसार में प्रसिद्धि पा चुके बाबा रामदेव ने निश्चित रूप से योग का प्रचार जबरदस्त तरीके से किया। इस दरम्यान उन्होंने बड़ा व्यवसाय भी स्थापित किया। बाजार में हजारों प्रोड्क्टस उतारकर उनकी कंपनी का टर्नओवर लाखों-करोड़ों में नहीं, बल्कि अरबों में पहुंच गया है।

विवादों के इतर देखें तो बाबा रामदेव की कोशिशों की बदौलत ही योग को वैश्विक मान्यताएं मिली। केंद्र सरकार ने भी प्रचार-प्रसार में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी। उसके बदले सरकार ने भी उनका फायदा चुनावों में जमकर उठाया। इस सच्चाई से भी इंकार नहीं किया जा सकता। लेकिन इससे योग विज्ञान का कुछ समय बीतने के बाद नुकसान हुआ। योग सत्ता पक्ष और विपक्ष में बंटकर भाजपा और कांग्रेस हो गया। जब पहला योग दिवस मना, तो कांग्रेस सहित तमाम विपक्षी दलों ने आयोजन का वॉकआउट किया। यहां तक उन्होंने और उनके कार्यकर्ताओं ने भी योग नहीं किया। लेकिन भाजपा ने हर्षोल्लास से मनाया। दरअसल, उनके मनाने का कारण क्या था, सभी को पता था। ठीक है, अगर विपक्षी दलों को बाबा रामदेव से कोई आपत्ति या ना-खुशी है, तो उनको योग को विरोध की केटेगरी में नहीं रखना चाहिए। बहरहाल, कोई कहे बेशक कुछ न, पर सियासत ने योग को धर्म से छोड़ने की भी कोशिशें की। योगासनों में भी धर्मों की एबीसीडी खोजी जाती है। दूसरा, सबसे दुःखद पहलू योग के साथ ये जुड़ा, योग का

व्यावसायिकरण कर दिया गया। कईयों की दुकानें योग की आड़ में चल पड़ी हैं। बड़े-बड़े प्रतिष्ठान, कॉलेज, स्कूल, प्रशिक्षण केंद्र संचालित हो गए हैं, जहां योग सीखाने के नाम पर मोटा माल काटा जा रहा है। योग गुरूओं, एक्सपर्टस व प्रशिक्षकों की तो फौज ही खड़ी हो गई है। बड़े-बड़े नेताओं ने अपने लिए पर्मानेंट योग प्रशिक्षक हायर किए हुए हैं। कुल मिलाकर योग को लोगां ने अब पूरी तरह से स्टेटस सिंबल बना डाला है। यानी मध्यम वर्ग और गरीबों की पहुंच से बहुत दूर कर दिया गया है। योग विधा नई नहीं है, पांच हजार पूर्व ऋषि परंपराओं से मिली अनमोल धरोहर जैसी है। ज्यादा पुराने समय की बात न करें, सिर्फ आजादी तक का इतिहास खंगाले तो पता चलता है कि उस वक्त तक भी चिकित्सा विज्ञान ने उतनी सफलता नहीं पाई थी जिससे अचानक उत्पन्न होने वाली बीमारियों से तुरंत इलाज कराया जाए। उस वक्त भी जड़ी-बुटियों और नियमित योगासन पर ही समूचा संसार निर्भर हुआ करता था।

अंग्रेजी दवाओं का विस्तार कोई चालीस-पचास के दशक से जोर पकड़ा है। तब मात्र एकाध ही फार्मा कंपनियां हुआ करती थी, जो अंग्रेजी दवाइयों का निर्माण करती थीं। विस्तार अस्सी के दशक के बाद आरंभ हुआ। आज तीन से चार हजार के करीब फार्मा कंपनियां अंग्रेजी दवा बनाने में लगी हैं। बावजूद इसके योग का बोलबाला दिनों दिन बढ़ रहा है। जानकार बताते हैं कि अंग्रेजी दवाइयां तुरंत असर तो करती हैं। पर, शरीर की प्रतिरोधक क्षमता हिला देती हैं। शायद, इस सच्चाई से आम लोग अनभिज्ञ होते हैं कि बड़ी-बड़ी फार्मा कंपनियों के मालिक भी नियमित योगासन करते हैं। क्योंकि उनको योग के फायदे पता होते हैं। योग को एक नहीं, बल्कि हजारों बड़ी और गंभीर बीमारियों से लड़ने का हथियार माना गया है। वक्त फिर से पल्टा है, इसलिए लोग धीर-धीरे पुरानी दवा पद्वितियों की ओर लौटने लगे हैं। सालों पुरानी हेल्थ प्रॉब्लम से छुटकारा पाने के लिए मरीज योग की मदद लेने लगे हैं। अनुभवी डॉक्टर्स भी अपने पेशेंट को डेली रूटीन में योग शामिल करने की सलाह देते हैं। योग चिकित्सक मंगेश त्रिवेदी की माने तो ऐसे कई केस सामने आए हैं, जिसमें 15-20 साल पुरानी बीमारी को खत्म करने के लिए लोगों ने पहले योग की मदद ली और 3 से 4 महीने में इसका असर भी देखा है। बहरहाल, जरूरत इस बात की है कि योग को राजनीति और धर्म के मैदान में ना घसीटा जाए।

कुछ राजनीतिक दल योग और योग को नियमित अपनाने वालों को अपना वोट बैंक के तौर पर इस्तेमाल करते हैं। कुछ लोग योग पर एक छत्र राज और अपनी ठेकेदारी भी जमाते हैं। ऐसा नहीं होना चाहिए, योग सबके लिए है और वह भी निःशुल्क। योग हमें ऋषियों-मुनियों द्वारा दी गई बेशकीमती सौगात है। हमारी धरोहर है जिसे हमारे पूर्वज हमारे लिए छोड़कर गए हैं। इसे सजोकर रखना हम सबका परमदायित्व बनता है। योग के फायदों से हम परिचित हैं। योग को लेकर हमें किसी लोभ-लालच में नहीं पड़ना चाहिए। योग करने वालों को भाजपा का कार्यकर्ता, रामदेव का अनुयायी या आरएसएस का शुभचिंतक नहीं समझना चाहिए। हालांकि, ऐसी मिथ्या अब लोगों से दूर हुई है। सत्ता पक्ष हो या विपक्ष सभी अपने स्वास्थ्य की परवाह करते हुए योग को अपनाएं। 'विश्व योग दिवस' का मकसद हममें योगासन के प्रति ललक पैदा करना और दूसरों को योग के लिए जागरूकता करना मात्र होता है। योग स्वस्थ शरीर का मुख्य सारथी है, इसे दूर न करें, नियमित अपनाएं।

सड़क हादसे में 2 की मौत

3 लोग गंभीर रूप से घायल, खाना खाकर लौटते समय स्कॉर्पियो को अज्ञात वाहन ने मारी टक्कर

मीडिया ऑडीटर, कांकेर एजेंसी। कांकेर जिले के चारामा में बुधवार की रात सड़क हादसे 2 लोगों की मौत हो गई है, जबकि 3 गंभीर रूप से घायल है। सभी लोग ढाबे में खाना खाने के बाद स्कॉर्पियो से पिपरौद गांव लौट रहे थे। इसी दौरान झिपाटोला और बाबूकोहका के बीच अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी।

जानकारी के अनुसार, चारामा पिपरौद निवासी 5 लोग स्कॉर्पियो से चारामा ढाबा खाना खाने आए थे। वापस आने के दौरान करीब 10 बजे एनएच-30 झिपाटोला के करीब अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी। हादसा इतना भीषण था कि, वाहन के परखच्चे उड़ गए।

घायल धमतरी किए गए रेफर: उसमें सवार पिपरौद निवासी ड्राइवर लक्ष्मीनारायण मंडावी और विजय सलाम की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि पीछे बैठे 3 लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। तीनों घायलों को प्राथमिक इलाज के लिए स्वास्थ्य केंद्र चारामा लाया गयाय। जहां से बेहतर इलाज के लिए धमतरी रेफर कर दिया गया है।

अज्ञात वाहन की तलाश जारी, जांच जारी: चारामा थाना प्रभारी दिलेश्वर चंद्रवंशी ने बताया कि, अज्ञात वाहन स्कॉर्पियो को टक्कर मारकर फरार हो गया है। जिसकी तलाश की जा रही है। शवों का पंचनामा कर पीएम के लिए भेजा गया। पीएम के बाद शव परिजनों को सौंपा जाएगा। फिलहाल मामले की जांच जारी है।

अमृत सरोवर स्थलों पर 21 जून को किया जायेगा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। भारत सरकार द्वारा स्वास्थ्य कल्याण और प्रकृति के साथ सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए अमृत सरोवर स्थलों पर 21 जून 2024 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन करने हेतू निर्देशित किया गया है। उक्त कार्यक्रम में निम्नानुसार आयोजन किया जाना है। अमृत सरोवर स्थलों पर स्थानीय समुदाय, आमजन, सरकारी अधिकारियों, कर्मचारियों एवं हितग्राहियों के लिए योग सत्र आयोजन किया जाना है। जिसमें आसन, प्राणायाम (सांस लेने हेतु व्यायाम) और ध्यान संबंधित क्रिया शामिल किया जायेगा। इसके साथ ही योग के लाभों और स्वस्थ शैली जीवन को बनाये रखने के महत्व पर संगोष्ठी एवं परिचर्चा किया जाना है। ग्राम, ग्राम पंचायतों के आमजन, हितग्राहियों को आयोजन से संबंधित सभी गतिविधियों के बारे में सूचित कर आयोजन में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाये। जिससे शारीरिक एवं मानसिक विकास हो सकेगा। इन गतिविधियों के सफल क्रियान्वयन के लिए अपने स्तर पर निगरानी एवं पर्यवेक्षण कराये जाये। गांव में निर्मित अमृत सरोवर के पास योग अभ्यास के साथ जल संरक्षण जल संवर्धन की महत्त्वता के प्रति समझ विकसित करना है, योग अभ्यास के दौरान ग्रामीण जन जहां एक और स्वस्थ जीवन की राह चुनेंगे दूसरी और, सामाजिक समरसता आजीविका संवर्धन गतिविधियों भी कार्ययोजना तय करेंगे तथा जल स्रोतों की स्वच्छता पर भी चर्चा की जाएगी।

लंबी बीमारी से परेशान युवक ने की खुदकुशी

काफी समय से था डायलिसिस पर, ट्रेन के आगे कूदकर दी जान

मीडिया ऑडीटर, भिलाई निप्र। अपनी लंबी बीमारी से परेशान होकर 57 वर्षीय युवक ने सुबह ट्रेन से कटकर खुदकुशी कर ली। युवक की पहचान राजेंद्र साव निवासी सूर्या रेसीडेंसी के रूप में हुई है। सुपेला पुलिस मामले की जांच कर रही है।

जानकारी के मुताबिक राजेंद्र कुमार साव काफी लंबे समय से किडनी से जुड़ी बीमारी थी। डॉक्टर ने उसे रेगुलर डायलिसिस कराने की सलाह दी थी। वो बीमारी से इतना तंग आ गया कि वो अपनी बाइक से सुपेला थाना अंतर्गत मौर्या टाकीज के आगे शराब भट्ठी के पास पहुंचा। इसके बाद रेलवे ट्रैक की तरफगया और आ रही ट्रेन के आगे कूद गया।

गुरुवार सुबह सुपेला पुलिस को जीआरपी ने जानकारी दी कि एक व्यक्ति का शव रेलवे ट्रेक के किनारे पड़ा है। सुपेला पुलिस मौके पर पहुंची और उसने शव को पंचनामा कार्रवाई के बाद लाल बाहदुर शास्त्री अस्पताल स्थित मरचुरी में भिजवाया। परिजनों ने शव की पहचान कर ली है। पीएम के बाद शव परिजनों के हवाले कर दिया है।

सुपेला पुलिस का कहना है कि मामला सुसाइड का ही है। परिजनों ने भी पूछताछ में यही बात बताई है कि वो लंबी बीमारी से ग्रसित था और उसने इसी तंग आकर जान दी है।

बदमाशों ने दुकान संचालक को मारा चाकू

पुलिस में एफआईआर कराने पर किया विवाद, बटनदार चाकू निकाल कर किया वार, चाकूबाजों पर पुलिस का लगाम नहीं

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर निप्र। बिलासपुर पुलिस चाकूबाजों पर लगाम लगाने में नाकाम है। एक बार फिर से बदमाशों ने दुकान संचालक पर चाकू से ताबड़तोड़ वार कर दिया, जिससे गंभीर रूप से घायल दुकानदार को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। हमलावरों ने पुलिस में केस दर्ज कराने के नाम पर उसके साथ गाली-गलौज कर चाकू मारा है। घटना मस्तूरी क्षेत्र के मल्हार चौकी की है।

मल्हार के वार्ड नंबर 10 में रहने वाला रवि कैवर्त्य (23) मेलापारा चौक के पास पान दुकान चलाता है। बीते सोमवार की रात वो अपनी दुकान में बैठा था। उसी समय रात करीब आठ बजे गांव के ही सोमू कैवर्त्य, प्रशांत कैवर्त्य और बुंदरू कैवर्त वहां पहुंचे। इस दौरान उन्होंने थाने में केस दर्ज कराने का आरोप लगाकर उसके साथ गाली-गलौज करने लगे।

दुकानदार के विरोध करने पर निकाल लिया चाकू: उनकी बातों को सुनकर दुकान संचालक रवि ने उन्हें समझाइश दी और गाली-गलौज करने से मना किया। वह थाने में शिकायत नहीं करने की बात कह रहा था। तभी सोमू कैवर्त्य ने अपनी जेब में रखे बटनदार चाकू निकाल लिया।

दौड़ा कर मारा चाकू, घायल दुकानदार अस्पताल में भर्ती: युवक के हाथ में चाकू देखकर दुकानदार रवि दुकान छोड़कर भागने लगा। इतने में सोमू कैवर्त्य ने उस पर चाकू से हमला कर दिया। फिर दौड़ा-दौड़ाकर उसे चाकू मारने लगा। बदमाशों ने मिलकर उसके पीठ व सीने में कई बार वार किया, जिससे वह खून से लथपथ घायल हो गया। इस बीच आसपास के लोगों ने बीच-बचाव किया। फिर हमलावर वहां से भाग गए। इस हमले में घायल रवि को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। वहीं, पुलिस केस दर्ज कर हमलावरों की तलाश कर रही है।

बिलासपुर में नहीं थम रहा चाकूबाजी और लूटपाट: जिले में चाकूबाजी व लूटपाट की घटनाएं आम हो गई है। रात में लोग निकलने से डर रहे हैं। एक दिन पहले ही शहर के बीच बदमाशों ने डॉक्टर पर ईंट से हमला कर लूटपाट किया था। वहीं, लगातार चाकूबाजी की घटनाएं भी हो रही है। स्थिति यह है कि बदमाशों पर पुलिस लगाम लगाने में नाकाम साबित हो रही है।

जिला पंचायत अध्यक्ष ने हरी झंडी दिखा श्रद्धालुओं को किया रवाना

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। छत्तीसगढ़ शासन की महत्वाकांक्षी 'श्रीरामलला दर्शन' अयोध्या धाम यात्रा योजना के अंतर्गत पहले चरण में मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिले के 50 श्रद्धालु श्री रामलला के दर्शन के लिए विगत दिवस रवाना हये। इस योजना का लाभ लेने हेतु पहले चरण में जिले के लोगों ने अपना आवेदन प्रस्तुत किया था। कलेक्टर डी. राहुल वेंकट के निर्देशन एवं परियोजना निदेशक नितेश उपाध्याय के मार्गदर्शन में गत दिवस 50 यात्रियों का चयन किया गया। अयोध्या धाम यात्रा हेतु आयु सीमा न्यूनतम 18 वर्ष एवं अधिकतम 75 वर्ष निर्धारित की गई है। तीर्थयात्री के लिए यात्रा में शमिल होने के लिए जनपद पंचायत मनेंद्रगढ़ से 9, जनपद पंचायत खड़गवां से 20 तथा जनपद पंचायत भरतपु से 21 लोगों दो बस में अम्बिकापुर रेलवे स्टेशन हेतु वाहन व्यवस्था किया गया है। अंबिकापुर रेलवे स्टेशन से दोपहर 12 बजे ट्रेन से श्रद्धालुओं को आगे का सफर तय करना था, इसलिए सभी की सुविधा को ध्यान में रखते हुए तीर्थ यात्रियों के बस को यहां से सुबह रवाना कर दिया गया। इस दौरान जिला पंचायत अध्यक्ष कोरिया रेणुका सिंह ने रामलला दर्शन के लिए जाने वाले वाहनों को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया।

उठाईगिरी, ओडिशा गैंग के 4 गिरफ्तार

मजदूर बताकर किराए पर लिया मकान, रेकी कर सराफा कारोबारी के 15 लाख के गहने किए पार

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर निप्र। छत्तीसगढ़ के कई शहरों में उठाईगिरी और चोरी की वारदात को अंजाम देने वाले ओडिशा गैंग के 4 आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। इस गिरोह ने मजदूरी करने के बहाने किराए पर मकान लिया था। जिसके बाद रेकी कर सराफा कारोबारी के 15 लाख के गहनों से भरा बैग पार कर दिया था। मामला सरकंडा थाना क्षेत्र का है। एसपी रजनेश सिंह ने बताया कि, इमलीपारा निवासी जवाहर सोनी की अशोक नगर सरकंडा में मां भवानी ज्वेलर्स नाम से सोने-चांदी के जेवरों की दुकान है। बुधवार को दोपहर वो दुकान खोलने के लिए पहुंचे। तब शटर और दुकान के सामने गंदगी देखकर उन्होंने गहनों से भरे बैग को बाइक की टंकी में रख दिया और दुकान के सामने सफाई करने लगे। इसी दौरान बाइक सवार युवक उनका बैग लेकर भाग निकले। उठाईगिरी की सूचना पर पुलिस की टीम मौके पर पहुंची। जिसके बाद लुटेरों की जानकारी जुटाकर सीसीटीवी कैमरों की जांच की गई।

बाहरी गैंग सक्रिय होने की थी आशंका: जिस तरीके वारदात हुई, इससे पुलिस को पहले से शक था कि उठाईगिरी की घटना में बाहरी गैंग के लोग शामिल हो सकते हैं। इस तरह की घटना पहले भी बैंक और भीड़भाड़ वाली जगहों पर कपड़ों में गंदगी लगाकर उठाईगिरी का मामला सामने आया था। नट और कंजर गिरोह यह तरीका अपना कर लोगों को शिकार बनाते हैं। इसी संदेह के आधार पर आसपास में रहने वाले बाहर से आए लोगों की जांच शुरू की गई। साथ ही जिले के सभी थाना क्षेत्र में घटना की सूचना देकर संदेहियों की धरपकड़ करने के निर्देश दिए गए।

एक सप्ताह पहले किराए पर लिया मकान, फिर रेकी की: ओडिशा के जाजपुर और गंजाम जिले के निवासी युवक एक सप्ताह पहले ही शहर पहुंचे थे। युवकों ने सिरगिट्टी के आवासपारा में 2500 रुपए महीने में किराए पर मकान लिया था। उन्होंने मकान मालिक को मजदूरी करने की जानकारी दी थी। यहां पर रहकर युवक शहर में उठाईगिरी करने के लिए रेकी करते रहे। चार दिन रेकी के बाद दो दिन पहले ही युवकों ने अशोक नगर स्थित ज्वेलरी दुकान को चुना। इसके बाद उन्होंने उठाईगिरी का प्लान बनाकर घटना को अंजाम दिया। घटना को अंजाम देने के बाद युवक सिरगिट्टी स्थित किराए के मकान में जाकर छुप गए।

300 सीसीटीवी कैमरों की फुटेज से मिला सुराग: एसपी रजनेश सिंह ने बताया कि, उठाईगिरी करने वाले गिरोह को पकड़ने के लिए पुलिस की अलग-अलग 15 टीमें बनाई गई। उन्हें अलग-अलग टॉस्क दिया गया। इस दौरान शहर के कई इलाके से 300 से अधिक सीसीटीवी कैमरों की जांच की गई। इसी आधार पर भाग रहे युवकों की पहचान की कोशिश की जाने लगी।

सैक्स रैकेट चलाती हैं महिलाएं

परेशान मोहल्लेवासियों ने की शिकायत, पुलिस ने दबिश देकर 3 महिलाओं को किया गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। बिलासपुर जिले में पुलिस ने सैक्स रैकेट चलाने वाली 3 महिलाओं को गिरफ्तार किया है। ये महिलाएं शहर के सार्वजनिक जगहों पर ग्राहक तलाशती थीं। जिससे परेशान होकर मोहल्ले के लोगों ने पुलिस अफसरों से शिकायत की थी। मामला सिविल लाइन थाना क्षेत्र का है।

दरअसल, वीआईपी इलाके छत्तीसगढ़ भवन और कोन्हेर गार्डन के पास महिलाओं और युवतियों का गैंग है, जो सैक्स रैकेट चलाती है। महिलाएं यहां बैठकर सुबह से लेकर शाम तक ग्राहक तलाशती रहती हैं। उनकी इस हरकतों से मोहल्ले की महिलाएं और युवतियां परेशान होती हैं। आसपास का माहौल खराब हो रहा है। आने-जाने वालों को परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

शिकायत के बाद एसपी ने लिया एक्शन: इसकी शिकायत महिलाओं ने एसपी रजनेश सिंह से शिकायत की थी। जिसके बाद उन्होंने एक्शन लेते हुए एडिशनल एसपी गरिमा द्विवेदी को टीम बनाकर कार्रवाई करने के निर्देश दिए। बुधवार को डीएसपी अनीता प्रभा मिंज के नेतृत्व में टीम ने दबिश दी।

इस दौरान तीन महिलाओं को पकड़कर पूछताछ की गई। उन्होंने पूछताछ में बताया कि वो देह व्यापार में लिप्त हैं। इस पर पुलिस ने महिलाओं के खिलाफ प्रतिबंधात्मक कार्रवाई की है। साथ ही उन्हें इस तरह की गतिविधियों से दूर रहने की सख्त हिदायत भी दी।

अब नजर रखेगी पुलिस की टीम: एसपी रजनेश सिंह ने बताया कि, गार्डन और सार्वजनिक जगहों पर देह व्यापार में लिप्त महिलाओं के सक्रिय होने की शिकायत मिली थी। इस पर संवेदनशील जगहों पर नियमित पेट्रोलिंग के निर्देश दिए हैं। इसके साथ ही रक्षा टीम को भी निर्देशित किया गया है। अब रक्षा टीम शिकायत मिलते ही संबंधित जगहों पर पहुंचकर कार्रवाई करेगी।

डकैती डालने से पहले 3 गिरफ्तार

रायपुर एजेंसी। राजधानी रायपुर में पुलिस ने धारदार हथियार के साथ 3 डकैतों को गिरफ्तार किया है। डकैत देर रात सड़क पर पिकअप में बैठकर डकैती की योजना बना रहे थे। पुलिस को इसकी भनक लग गई और घेराबंदी कर आरोपियों को धर दबोचा। मामला विधानसभा थाना क्षेत्र का है। दरअसल, मंगलवार की रात पचेड़ा गांव के कृषि उपज मंडी के पास एक पिकअप पर कुछ संदिग्ध लोग सवार थे। इसकी सूचना पुलिस को मिल गई। जिसके बाद पुलिस ने घेराबंदी कर 3 लोगों को अरेस्ट कर दिया। हालांकि, घेराबंदी के दौरान कुछ आरोपी गाड़ी से कूदकर भाग गए।

एक नाबालिग समेत 3 अरेस्ट: आरोपियों के पास से एक बड़ा हथौड़ा, एक लोहा कटर, बिजली तार काटने का बड़ा कटर, तीन धारदार स्टील का चाकू, एक लोहे का नुकीला छड़, पेंचिस, लोहा कटर और छोटा हथौड़ी बरामद किया गया है। पुलिस ने इस मामले में हेमलाल घृतलहरे, हेमराज घृतलहरे और एक नाबालिग को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है।

हिट एंड रन मोटर दुर्घटना हेतु समिति गठित

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। भारत सरकार सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय नई दिल्ली के अधिसूचना 25 फरवरी 2022 द्वारा नवीन टक्कर मार कर भागना मोटर यान दुर्घटना पीड़ित प्रतिकार स्कीम 2022 लागू की गई है। छत्तीसगढ़ शासन परिवहन विभाग मंत्रालय महानदी भवन नवा रायपुर अटल नगर के पत्र के परिपालन में जिला मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर में कंडिका 11(1) अनुसार जिला स्तरीय समिति का गठन किया जाता है। जिसमें दावा निपटान आयुक्त कलेक्टर अध्यक्ष, दावा जांच अधिकारी अनुविभागीय दण्डाधिकारी सदस्य, पुलिस अधीक्षक सदस्य, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी सदस्य, जिला परिवहन अधिकारी सदस्य, आर्थो वेलफेयर फाउण्डेशन एमसीबी एनजीओ सदस्य तथा सिनियर डिवीजिनल मैनेजर अतुल ठाकेर समिति के सदस्य सचिव होंगे।

विभिन्न पुरस्कार एवं सम्मान हेतु 2021-22 एवं 2022-23 के लिए आवेदन आमंत्रित

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। छत्तीसगढ़ शासन, खेल एवं युवा कल्याण विभाग द्वारा प्रतिवर्ष खिलाडियों, प्रशिक्षकी, निर्णायकों को खेल पुरस्कार प्रदान कर राज्य खेल अलंकरण से सम्मानित किया जाता है। यह पुरस्कार राज्य के लिए उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाडियों, प्रशिक्षकों, निर्णायकों को प्रदान किये जाते है। राज्य खेल अलंकरण के अंतर्गत सीनियर वर्ग के ऐसे खिलाडियों को शहीद राजीव पाण्डे पुरस्कार से अलंकृत किया जाता है। जिनके द्वारा राष्ट्रीय चौम्पियनशिप में या राष्ट्रीय खेलों में कोई पदक प्राप्त किया गया हो या अधिकृत अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में देश का प्रतिनिधित्व किया गया हो। इसी प्रकार जूनियर वर्ग के उन खिलाड़ियों को शहीद कौशल यादव पुरस्कार से अलंकृत किया जाता है। जिनके द्वारा जूनियर वर्ग के राष्ट्रीय चौम्पियनशिप में कोई पदक प्राप्त किया गया हो। ऐसे खिलाडी जिन्होंने विगत 5 वर्षों में चार बार सीनियर वर्ग में राष्ट्रीय चौम्पियनशिप में छत्तीसगढ़ की ओर से प्रतिनिधित्व करने वाले महिला, पुरुष खिलाड़ियों को शहीद पंकज विक्रम सम्मान से सम्मानित किया जाता है। प्रशिक्षकों, निर्णायकों को वीर हनुमान सिंह पुरस्कार से अलंकृत किया जाता है। खेल से जुड़े 55 वर्ष या अधिक उम्र के अंतर्राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिता में भाग लिया हो या राष्ट्रीय प्रतियोगिता में पदक प्राप्त किया हो या संबंधित ने ऐसी कोई उल्लेखनीय सेवा खेल के क्षेत्र में की हो, जिसके आधार पर उन्हें सम्मानित किये जाने हेतु विचार किया जाए, उन्हें शहीद विनोद चौबे सम्मान से अलंकृत किया जाता है। इसी प्रकार सीनियर व जूनियर वर्ग में राष्ट्रीय प्रतियोगिता में पदक प्राप्त दल को मुख्यमंत्री ट्रॉफी प्रदान की जाती है। पुरस्कार के नियम छत्तीसगढ़ राजपत्र में प्रकाशित किए गए है, नियमों के अंतर्गत पात्रता रखने वाले आवेदकों को पुरस्कार के चलिए प्रावीण्यता के आधार पर चयन किया जाएगा।

स्कूल प्रबंधन समिति की बैठक साल में 4 बार होगी

इस सत्र की पहली मीटिंग 26 जून को होगी, मंत्री तय करेंगे समिति का अध्यक्ष

मीडिया ऑडीटर, रायपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ में 26 जून से नए सत्र की शुरुआत हो रही है। नए सत्र की तैयारियों के साथ ही विभाग ने शाला प्रबंधन समिति की बैठक की तैयारियां भी शुरू कर दी है। समिति की बैठक 3 महीने में 1 बार यानी एक साल में 4 बार होगी।

पहली बैठक 18 जून को नए शिक्षा सत्र के पहले दिन होने वाली थी, लेकिन छुट्टियों के आगे बढ़ने के कारण बैठक की तारीख भी आगे बढ़ा दी गई है। अब 26 जून को बैठक आयोजित की जाएगी।

नए सत्र के पहले ही दिन पहली बैठक: शाला प्रबंधन एवं विकास समिति की दूसरी बैठक 8 अगस्त, तीसरी 14 नवंबर और चौथी 22 जनवरी को होगी। विभाग की ओर से निर्देश है कि सभी तय तारीखों पर बैठक होनी चाहिए। इसके लिए स्कूल शिक्षा विभाग ने सभी जिलों को निर्देश जारी कर दिए है।

मंत्री तय करेंगे अध्यक्ष का नाम: प्रबंधन एवं विकास समिति के अध्यक्ष का मनोनयन प्रभारी मंत्रियों की सहमति से किया जाएगा। नई सरकार के गठन के बाद शाला प्रबंधन एवं विकास समिति भंग करते हुए अध्यक्ष हटा दिए गए थे। अध्यक्ष की जिम्मेदारी स्कूल के प्राचार्य संभाल रहे हैं। अब समिति के नए अध्यक्ष का मनोनयन किया जाएगा।

इसलिए बढ़ाई गई छुट्टियां: प्रदेश में इस बार नया शिक्षा सत्र 18 जून से शुरू होने वाली थी, लेकिन गर्मी के कारण सरकार ने ने छुट्टियां 25 जून तक बढ़ा दी है। अब 26 से स्कूल खुलेंगे। हर साल की तरह स्कूलों में शाला प्रवेशोत्सव मनाया जाएगा। विद्यार्थियों का तिलक लगाकर स्वागत किया जाएगा।

स्कूल छोड़ चुके छात्रों वो वापस लाने पर रहेगा फोकस: इस बार विभाग का फोकस उन छात्रों पर ज्यादा है। जिन्होंने पढ़ाई शुरू तो कि लेकिन किसी कारण बीच में ही छोड़ दिया। पिछले कुछ सालों में शाला त्यागी बच्चों की संख्या बढ़ी है। समिति की बैठकों समेत विभाग ने स्कूलों को शाला त्यागी छात्रों की पढ़ाई फिर से शुरू कराने के निर्देश भी दिए हैं।

नए सत्र के पहले दिन होगी वेलकम पार्टी: शिक्षा सत्र के पहले दिन बच्चों को नि:शुल्क पाठ्य पुस्तक और यूनिफॉर्म के साथ ही हाईस्कूलों में कक्षा 9वीं की छात्राओं को सरस्वती साइकिल योजना के तहत नि:शुल्क साइकिल देने की तैयारी चल रही है। इस दिन बच्चों को न्यौता भोज कराने के भी निर्देश दिए गए हैं। विभाग ने स्कूल खुलने के पहले अनिवार्य रूप से स्कूलों की साफ-सफाई और मरम्मत योग्य स्कूलों की मरम्मत कर रंग-रोगन करने कहा है।

सऊदी अरब के मक्का में लू की वजह से अब तक 900 से अधिक यात्रियों की मौत

मक्का (एजेंसी)। सऊदी अरब के मक्का में लू की वजह से 900 से अधिक हज यात्रियों की जान जा चुकी है. हैरत की बात यह है कि इस्लाम में सबसे पवित्र माने गए शहर में इतनी बड़ी संख्या में मौतें तब हुईं, जब वहां इस तीर्थ यात्रा को लेकर पूर्व में चेतावनी भी दी जा चुकी थी. 2024 की शुरुआत में छपी एक स्टडी में आगाह किया गया था कि इस तीर्थयात्रा के दौरान लोगों की जान तक जाने का जोखिम हो सकता है.

सऊदी के साइंटिस्ट्स ने चेताया था कि मक्का और उसके आस-पास के इलाके में जलवायु परिवर्तन के चलते वहां का तापमान बढ़ रहा है और यह हज यात्रियों की सेहत पर बुरा असर डाल सकता है. %जर्नल ऑफ ट्रैवल मेडिसिन% में 'Escalating climate-related health risks for Hajj pilgrims to Mecca' शीर्षक वाले आर्टिकल में बताया गया था कि दुनिया भर में तापमान बढ़ रहा है, जिससे कि लू की स्थिति और गंभीर हो सकती है. इसे हीट-रिलेटेड इलनेस (एचआरआई) टर्म दिया गया था, जिसका मतलब गर्म जलवायु वाली जगहों पर जाने वाले यात्रियों के लिए गर्मी से जुड़ी बीमारियों का बढ़ता खतरा है.

स्टडी में सामने आए परिणामों से पता चला था कि मक्का में औसत औसत शुष्क और वेट बल्ब तापमान में प्रति दशक क्रमशः 0.4 डिग्री सेल्सियस और 0.2 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हुई. %वेट-बल्ब तापमान% आमतौर पर शुष्क हवा के तापमान को आर्द्रता के साथ जोड़ता है. एक्सपर्ट्स ने इस दौरान यह भी पाया कि दोनों तापमानों का हीट स्ट्रोक (एचएस) और हीट एक्सहॉजन (एचई) की घटनाओं के साथ गहरा नाता था. इतना ही नहीं, अमेरिका में मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमआईटी) के विशेषज्ञों की ओर से साल 2019 में किए गए अध्ययन में पाया गया था कि भले ही दुनिया जलवायु परिवर्तन के सबसे बुरे प्रभावों को कम करने में सफल हो जाए पर हज 2047 से 2052 तक और 2079 से 2086 के बीच अत्यधिक खतरे की सीमा से अधिक तापमान में आयोजित होगा.

ट्रूडो का ईरान के खिलाफ बड़ा फैसला, कनाडा ने IRGC को घोषित किया आतंकी संगठन

कनाडा (एजेंसी)। कनाडा की जस्टिन ट्रूडो सरकार ने ईरान को बड़ झटका दिया है. कनाडा ने ईरान की इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कोर (IRGC) को आतंकी संगठन घोषित किया है. बुधवार दोपहर को कनाडा के सार्वजनिक सुरक्षा मंत्री डोमिनिक लेब्लांक ने कहा कि ढ्ढक्रत्रष्ट की आतंकी गतिविधियों से मुकाबला करने के लिए कनाडा अपने पास उपलब्ध सभी साधनों का प्रयोग करेगा. मंत्री ने कहा कि ढ्ढक्रत्रष्ट सदस्यों समेत ईरान के हजारों अधिकारियों के कनाडा में प्रवेश पर रोक लगा दी गई है. जो लोग देश के अंदर पहले से हैं, उनकी जांच की जा सकती है और उन्हें बाहर किया जा सकता है। समाचार एजेंसी शिन्हुआ ने कनाडा के पब्लिक सेफ्टी प्रेस में आए एक बयान का हवाला देते हुए बताया कि, कनाडा को इस घोषणा के परिणामस्वरूप आतंकवादी संगठन की संपत्ति को तुरंत कनाडा में फ्रीज करना होगा. वह संपत्ति चाहे कनाडा की किसी बैंक में हो या किसी ब्रोकरेज में हों सभी को फ्रीज करना होगा. कनाडा में किसी भी तरह से आतंकी संगठन के स्वामित्व या नियंत्रण वाली संपत्ति से ताल्लुक रखना अपराध की श्रेणी में आता है।कनाडाई मीडिया के मुताबिक, यदि कोई धार्मिक संस्था घोषित आतंकवादी संगठन के साथ संबंध बनाकर रखती हैं तो उनको समाप्त किया जा सकता है. ऐसे समूहों से जुड़े लोगों का कनाडा में प्रवेश वर्जित किया जा सकता है. अमेरिका ने साल 2019 में ही इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कोर को आतंकवादी संगठन घोषित कर दिया था. अमेरिका के बाद अब कनाडा ने भी यह फैसला लिया है. कनाडा ने कहा कि ईरान ने देश के अंदर और बाहर दोनों जगह मानवाधिकारों का उल्लंघन किया है. साथ ही अंतरराष्ट्रीय नियम आधारित व्यवस्था को अस्थिर करने की इच्छा जताई है।

6 राज्यों की 8 लोकसभा सीटों की ईवीएम चेक होंगी

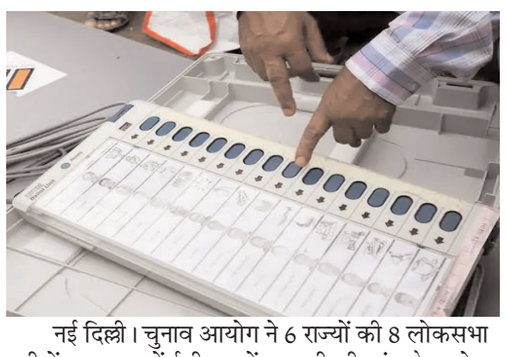

नई दिल्ली। चुनाव आयोग ने 6 राज्यों की 8 लोकसभा सीटों पर चुनाव में ईवीएम में गड़बड़ी की जांच के आदेश दिए हैं। इनमें हरियाणा-तमिलनाडु की दो-दो सीटें शामिल हैं। वहीं छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश की एक-एक सीटें हैं। 8 सीटों में से भाजपा को 3 और कांग्रेस को 2 सीटों में जीत मिली थी। वहीं, 3 सीटें अन्य पार्टियों के खाते में गईं। चुनाव आयोग की ओर से कहा गया है कि लोकसभा चुनाव 2024 में ईवीएम में गड़बड़ी की शिकायत के 8 आवेदन आए थे। इनमें ईवीएम की मेमोरी और माइक्रो कंट्रोलर की जांच की मांग की गई थी। आयोग अब इन 8 सीटों के 92 पोलिंग स्टेशनों पर इस्तेमाल हुई ईवीएम की जांच करेगा। इसके अलावा आयोग ने आंध्र प्रदेश और ओडिशा की 3 विधानसभा सीटों की ईवीएम की भी जांच के आदेश दिए हैं।

आयोग यहां के 26 पोलिंग स्टेशन पर ईवीएम में गड़बड़ी की जांच करेगा। राज्य की करनाल और फरीदाबाद सीट की ईवीएम चेक कराई जाएगी। करनाल से केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर और फरीदाबाद से केंद्रीय राज्य मंत्री कृष्णपाल गुर्जर चुनाव जीते हैं। इन दोनों सीटों पर कांग्रेस उम्मीदवारों की ओर से चुनाव के दौरान गड़बड़ी की आशंका जताई गई थी। करनाल से कांग्रेस उम्मीदवार दिव्यांशु बुद्धिराजा ने चुनाव आयोग को चिट्ठी लिखकर ईवीएम की जांच करने की मांग की थी। वहीं, फरीदाबाद से कांग्रेस उम्मीदवार महेंद्र प्रताप ने भी गड़बड़ी की आशंका जताई थी।

तमिलनाडु में जहरीली शराब से अब तक 34 की मौत

कल्लाकुरिची। तमिलनाडु के कल्लाकुरिची में जहरीली शराब पीकर मरने वालों की संख्या बढ़कर 34 हो गई है, जबकि 100 से ज्यादा लोगों का अलग-अलग अस्पतालों में इलाज चल रहा है। पुलिस के मुताबिक इन लोगों ने पैकेट में मिलने वाली शराब पी थी। कल्लाकुरिची जिले के करुणापुरम में 18 जून को हुई घटना के पीड़ितों में ज्यादातर दिहाड़ी मजदूर हैं। शराब पीने के बाद रात होते-होते इन लोगों को दस्त, उल्टी, पेट दर्द और आंखों में जलन होने लगी। पुलिस ने इस मामले में के कन्नुकुट्टी (49) समेत 4 लोगों को गिरफ्तार कर लिया है। कन्नुकुट्टी के पास से लगभग 200 लीटर जहरीली शराब बरामद हुई, जिसमें मेथेनॉल मिला हुआ है। कल्लाकुरिची में 12 एम्बुलेंस तैनात हैं। पुलिस के मुताबिक मरने वालों का पोस्टमॉर्टम कराया जा रहा है। रिपोर्ट आने पर मौत की असली वजह सामने आएगी। घटना के बाद राज्य सरकार ने कल्लाकुरिची के कलेक्टर-एसपी को हटा दिया है। इनकी जगह एमएस प्रशांत को कलेक्टर और रजत चतुर्वेदी को स्क्वनियुक्त किया है। वकीलों ने मद्रास हाईकोर्ट से कल्लाकुरिची मामले पर तत्काल सुनवाई करने की अपील की। जस्टिस डी कृष्णकुमार और के कुमारेश बाबू की बेंच 21 जून को इस पर सुनवाई करेगी।

केंद्र ने कहा- यूजीसी-एनईटी में गड़बड़ी की शिकायत नहीं मिली

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने 19 जून, बुधवार को यूजीसी-एनईटी की परीक्षा रद्द कर दी थी। यह परीक्षा इसके एक दिन पहले 18 जून को ही आयोजित की गई थी। गुरुवार को एजुकेशन मिनिस्ट्री के जॉइंट सेक्रेटरी गोविंद जयसवाल ने कहा कि हमें यूजीसी-एनईटी में गड़बड़ी की शिकायत नहीं मिली थी, बल्कि स्टूडेंट के हितों को सुरक्षित रखने के लिए हमने खुद से संज्ञान लिया है। जयसवाल ने कहा कि हमें एग्जाम में गड़बड़ी होने के इनपुट्स मिले थे, जिसके आधार पर हमने इसे रद्द करने का फैसला लिया। इसकी डिटेल हम सार्वजनिक नहीं कर सकते हैं। मामले की जांच सीबीआई को सौंप दी गई है। अब जल्द ही रीएग्जाम की तारीख का ऐलान किया जाएगा। उधर, कांग्रेस ने पीएम मोदी पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि पीएम हर साल परीक्षा पे चर्चा का ग्रैंड तमाशा करते हैं, लेकिन इसके बावजूद बिना लीक या फ्रॉड के एक एग्जाम नहीं आयोजित करवा सकते। कांग्रेस के छात्र संगठन एनएसयूआई ने दिल्ली में परीक्षा रद्द होने को लेकर प्रदर्शन भी किया। यूजीसी-एनईटी एग्जाम रद्द होने पर कांग्रेस ने एक्स पर कहा- मोदी सरकार युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रही है। कल देश के विभिन्न शहरों में यूजीसी-एनईटी की परीक्षा कराई गई। आज पेपर लीक के शक में परीक्षा रद्द कर दी गई। पहले पेपर लीक हुआ और अब यूजीसी-एनईटी का, मोदी सरकार- पेपर लीक सरकार बन गई है।

ये कैसी परीक्षा पे चर्चा, जहां रोज़ाना लीक होता है पर्चा-खरगे

नई दिल्ली। कांग्रेस ने यूजीसी-नेट परीक्षा को रद्द किए जाने के बाद बृहस्पतिवार को केंद्र सरकार को आड़े हाथ लेते हुए आरोप लगाया कि मोदी सरकार लीक और फ्रॉड के बिना कोई परीक्षा आयोजित नहीं कर सकती। पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने दावा किया कि इस सरकार ने शिक्षा एवं भर्ती की पूरी व्यवस्था को तहस-नहस कर दिया है। मेडिकल में प्रवेश के लिए होने वाली राष्ट्रीय पात्रता-सह-प्रवेश परीक्षा (नीट)-स्नातक 2024 में कथित अनियमितताओं को लेकर उपजे राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) द्वारा आयोजित यूजीसी-नेट परीक्षा रद्द करने का बुधवार को आदेश दिया ।

पीएम मोदी श्रीनगर पहुंचे, 2013 के बाद से जम्मू-कश्मीर का 25वां दौरा

श्रीनगर। श्रीनगर के शेर-ए-कश्मीर इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस सेंटर में एम्पावरिंग यूथ, ट्रांसफॉर्मिंग जम्मू-कश्मीर इवेंट में पहुंचे पीएम मोदी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी गुरुवार शाम को दो दिन के दौरे पर जम्मू-कश्मीर पहुंचे। वे कुछ देर में श्रीनगर के शेर-ए-कश्मीर इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस सेंटर में एम्पावरिंग यूथ, ट्रांसफॉर्मिंग जम्मू-कश्मीर% इवेंट में शामिल होंगे। साथ ही 1500 करोड़ के 84 प्रोजेक्ट्स का शिलान्यास करेंगे। 21 जून को योग दिवस पर सुबह 6.30 बजे से कॉमन योग प्रोटोकॉल के तहत एसकेआईसीसी के बैकयार्ड में डल झील के किनारे योग आसन करेंगे। इस दौरान करीब 7 हजार लोग उनके साथ योग करेंगे। कुछ लोगों को विभिन्न आसनों की ट्रेनिंग दी गई है। 10 साल पहले 2014 में संयुक्त राष्ट्र ने 21 जून के दिन को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस घोषित किया था। तब से इसे अलग-अलग थीम पर मनाया जा रहा है। 2024 के लिए योग दिवस की थीम योगा फॉर सेल्फ एंड सोसाइटी है। 2013 के बाद से यह उनकी जम्मू-कश्मीर की 25वीं यात्रा है। वहीं 2019 में अनुच्छेद 370 को निरस्त करने के बाद 7वीं यात्रा है।

दिल्ली में प्रचंड गर्मी के बीच लगा लाशों का ढेर, कोरोना के बाद सबसे अधिक 142 शवों का हुआ अंतिम संस्कार

नई दिल्ली। दिल्ली में घातक गर्मी के कारण बड़ी संख्या में लोगों की मौत हो रही है। राष्ट्रीय राजधानी के श्मशान घाटों में शवों की संख्या में वृद्धि देखी जा रही है। बता दें कि इस सीज़न में शहर के निगम बोध घाट पर 142 शवों का अंतिम संस्कार किया गया, जो कि कोविड-19 महामारी के बाद से सबसे अधिक है, उस समय रिकॉर्ड 253 शवों का अंतिम संस्कार किया गया था। निगम बोध घाट पर प्रतिदिन औसतन 60 शवों का अंतिम संस्कार किया जाता है। सर्दियों के दौरान, शवों की संख्या 60 से 90 के बीच होती है। हालांकि, 19 जून को 142 शवों का अंतिम संस्कार किया गया, यह एक ही दिन में सबसे अधिक आंकड़ा है।

अधिकारियों ने कहा कि पिछले कुछ दिनों से एक ही दिन में 70 से 90 शव श्मशान घाट पहुंच रहे हैं। उदाहरण के लिए, 14 जून को 43, 15 जून को 53, 16 जून को 70 और 17 जून को 54 शवों का अंतिम संस्कार किया गया।

नरेंद्र मोदी भारत में पेपर लीक को नहीं रोक पा रहे, हम संसद में इस मुद्दे को उठाएंगे-राहुल गांधी

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता और सांसद राहुल गांधी ने बुधवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित किया। उन्होंने नीट मुद्दे और यूजीसी-नेट परीक्षा रद्द होने को लेकर पीएम मोदी पर जमकर निशाना साधा। राहुल गांधी ने कहा, ऐसा कहा जा रहा था कि नरेंद्र मोदी ने यूक्रेन की लड़ाई रोक दी थी। इजराइल और गाजा की लड़ाई को भी नरेंद्र मोदी ने रोक दिया था। लेकिन किसी न किसी कारण में हिन्दुस्तान में जो पेपर लीक हो रहे हैं उन्हें नरेंद्र मोदी नहीं रोक पा रहे या फिर रोकना नहीं चाहते। जब उनसे पूछा गया कि क्या वह संसद में नीट और यूजीसी-नेट परीक्षा रद्द करने का मुद्दा उठाएंगे, तो कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने कहा, हां, हम संसद में इस मुद्दे को उठाएंगे। नीट मुद्दे और यूजीसी-नेट परीक्षा रद्द होने पर राहुल गांधी ने कहा, ऐसा इसलिए हो रहा है क्योंकि हमारे सभी संस्थानों पर कब्ज़ा कर लिया गया है। हमारे कुलपतियों को योग्यता के आधार पर नहीं रखा गया है। बल्कि इसलिए क्योंकि वे एक विशेष संगठन से संबंधित हैं। और इस संगठन और भाजपा ने हमारी शिक्षा प्रणाली में घुसपैठ की है और इसे नष्ट कर दिया है। नरेंद्र मोदी ने नोटबंदी के साथ अर्थव्यवस्था के साथ जो किया, वही अब शिक्षा प्रणाली के साथ किया गया है।

हम हरियाणा से अपने हिस्से का पानी मांग रहे, इ गठबंधन हमारी सहायता करे- संजय सिंह

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी (आप) के राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने बृहस्पतिवार को हरियाणा से दिल्ली के हिस्से का पानी लेने की लड़ाई में विपक्षी गठबंधन इंडिया का समर्थन मांगा। संजय सिंह ने एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए दिल्ली में गहराए जल सकंट के लिए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने कहा, वे प्रदर्शन करते हैं और नाटकबाजी करते हैं। अगर वे वास्तव में चाहते हैं कि दिल्ली को पानी मिले तो उन्हें हरियाणा भवन के बाहर प्रदर्शन करना चाहिए। सिंह ने बताया कि दिल्ली सरकार की जल मंत्री आतिशी भाजपा शासित राज्य हरियाणा से दिल्ली के हिस्से का पानी लेने के लिए 21 जून से अनिश्चितकालीन अनशन शुरू करेंगी। उन्होंने कहा, मैं 'इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस% (इंडिया) के घटक दलों से अपील करता हूं कि वे इस लड़ाई में हमारा साथ दें।

कांग्रेस चुनेगी लोकसभा में विपक्ष का नेता, सबसे ज्यादा सांसद उसी के पास-शरद पवार

नई दिल्ली। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) प्रमुख शरद पवार ने बृहस्पतिवार को कहा कि लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष की नियुक्ति के बारे में कांग्रेस फैसला करेगी क्योंकि सदन में विपक्षी गठबंधन 'इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस% ('इंडिया) के विभिन्न घटकों में सबसे ज्यादा सांसद कांग्रेस के पास हैं। यह पूछे जाने पर कि क्या विपक्ष के किसी सदस्य को लोकसभा का उपाध्यक्ष बनाए जाने के प्रयास किए जाएंगे, पवार ने दावा किया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी पिछली सरकार में इस नियम का पालन नहीं किया था। उन्होंने कहा कि इस मुद्दे पर चर्चा होगी, लेकिन उन्हें नहीं लगता कि इसका कोई सार्थक नतीजा निकलेगा। पवार महाराष्ट्र के पुणे जिले के बारामती में संवाददाताओं से बातचीत कर रहे थे। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने 543 सदस्यीय लोकसभा के लिए हाल ही में संपन्न आम चुनाव में 240 सीट पर जीत हासिल की और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) में अपने सहयोगियों के साथ सरकार बनाई। वहीं विपक्षी गठबंधन 'इंडिया के विभिन्न घटकों में कांग्रेस को सबसे ज्यादा 99 सीट पर कामयाबी मिली। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष की नियुक्ति के बारे में पूछे जाने पर पवार ने कहा, पहले हम इस बात पर सहमत थे कि यह पद सबसे अधिक सीट जीतने वाली पार्टी को मिलेगा। आज, कांग्रेस के पास लोकसभा में (विपक्षी दलों के बीच) सबसे अधिक सीट हैं, इसलिए वे तय करेंगे कि इस पद पर किसे नियुक्त किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा, कांग्रेस द्वारा फैसला किए जाने के बाद, उसे हमारे गठबंधन (इंडिया) की सहमति की आवश्यकता होगी। महाराष्ट्र में लोकसभा चुनाव में विपक्षी महा विकास आघाडी (एमवीए) की सफलता को लेकर पवार ने दावा किया कि लोगों का प्रधानमंत्री मोदी पर से भरोसा उठ गया है और मोदी की गारंटी फर्जी साबित हुई।

खाने में कॉकरोच, रेलवे ने मांगी माफी

नई दिल्ली। वंदे भारत एक्सप्रेस में भोपाल से आगरा की यात्रा के दौरान एक यात्री ने जब खाने का आर्डर किया तो उसे भोजन में कॉकरोच मिला। जिसकी फोटो यात्री ने सोशल मीडिया पर शेयर की और पोस्ट के वायरल होते ही इंडियन रेलवे कैटरिंग एंड टूरिज्म कॉरपोरेशन (आईआरसीटीसी) के आधिकारिक एक्स अकाउंट ने शख्स से माफी मांगी। दरअसल, एक एक्स यूजर विदित वार्ष्णेय ने गुस्से में शिकायत पोस्ट करते हुए आरोप लगाया कि उनके चाचा और चाची को वंदे भारत एक्सप्रेस में खाना परोसा गया जिसमें उन्हें कॉकरोच मिला। उसने बताया कि 18-06-24 को, मेरे चाचा और चाची वंदे भारत में भोपाल से आगरा की यात्रा कर रहे थे। इस दौरान खाने का आर्डर किया तो भोजन खाने लगे तो उसमें कॉकरोच मिला।

भारतीयों के लिए ताइवान जाना होगा आसान

ताइवान। ताइवान भारतीयों को %वीजा ऑन अराइवल% देने की तैयारी कर रहा है । उप विदेश मंत्री तियेन चंग-क्वांग ने कहा कि ताइवान भारतीय यात्रियों को वीजा ऑन अराइवल की सुविधा देने पर गंभीरता से विचार कर रहा है। उन्होंने कहा कि वीजा प्रक्रिया सरल करने का उद्देश्य भारत से संबंधों को मजबूत करना और भारतीयों को ताइवान आने के लिए प्रोत्साहित करना है। उन्होंने आगे कहा कि भारतीय बड़ी संख्या में यात्रा करते हैं इसलिए हम लुक ईस्ट पॉलिसी के तहत वीजा ऑन अराइवल पर सक्रियता से विचार कर रहे हैं। ताइपे में मंगलवार को संवाददाताओं से बात करते हुए ताइवान के उप विदेश मंत्री क्वांग ने कहा कि वीजा ऑन अराइवल पर निर्णय लेने से पहले हमें ताइवान के आव्रजन विभाग से प्रस्ताव को लेकर आंतरिक चर्चा की जरूरत है।

चिनाब ब्रिज पर ट्रेन का ट्रायल

श्रीनगर। जम्मू में चिनाब नदी पर बने दुनिया के सबसे ऊंचे आर्च ब्रिज पर 20 जून को ट्रेन का ट्रायल रन हुआ। इससे पहले 16 जून को ब्रिज पर इलेक्ट्रिक इंजन का ट्रायल हुआ था। यह ब्रिज संगलदान और रियासी के बीच रेलवे लाइन का हिस्सा है। इस रूट पर 30 जून से ट्रेन ऑपरेट करेगी। द्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने 16 जून को बताया था कि जम्मू के रामबन में संगलदान और रियासी के बीच ट्रेन का पहला ट्रायल रन पूरा हुआ है। यह ट्रेन चिनाब ब्रिज से होकर गुजरेगी, जो कि दुनिया का सबसे ऊंचा स्टील आर्च ब्रिज है। अश्विनी वैष्णव ने सोशल मीडिया पर पोस्ट कर इस सफल परीक्षण की जानकारी दी। चिनाब ब्रिज पेरिस के एफिल टावर से भी ऊंचा है। एफिल टॉवर की ऊंचाई 330 मीटर है, जबकि 1.3 किमी लंबे इस ब्रिज को चिनाब नदी पर 359 मीटर की ऊंचाई पर बनाया गया है। अश्विनी वैष्णव ने कहा कि ऊधमपुर श्रीनगर बारामूला रेल लिंक प्रोजेक्ट के तहत सभी निर्माण कार्य लगभग पूरे हो गए हैं। टनल नंबर 1 का निर्माण थोड़ा बाकी है। प्रोजेक्ट के पूरा होते ही भारतीय रेलवे कश्मीर घाटी को देश के बाकी रेलवे नेटकर्व से जोड़ने की दिशा में एक और कदम पूरा होगा।

चेक गणराज्य को हराकर पुर्तगाल ने जीत के साथ आगाज किया

लीपजिग (एजेंसी)। स्टॉपेज टाइम में सब्स्टीट्यूट फ्रांसिस्को कोंसिकाओ के गोल की मदद से पुर्तगाल ने यूरोपीय फुटबॉल चैम्पियनशिप के मैच में चेक गणराज्य को 2 . 1 से हराकर जीत के साथ आगाज किया। मैदान पर 90वें मिनट में उतरे कोंसिकाओ ने 92वें मिनट में गोल दागा। चेक गणराज्य के लिये लुकास प्रोवोड ने 62वें मिनट में गोल दागा। इसके आठ मिनट बाद पुर्तगाल के लियेरानाक ने रिबाउंड पर बराबरी का गोल किया। इससे करीब 24 साल पहले कोंसिकाओ के पिता सर्जियो ने हैट्रिक लगाकर गत चैम्पियन जर्मनी को यूरो 2000 से बाहर किया था। छह यूरो चैम्पियनशिप खेलने वाले पहले खिलाड़ी बने सुपरस्टार क्रिस्टियानो रोनाल्डो कोई गोल नहीं कर सके। वह पुर्तगाल के लिये टूर्नामेंट के इतिहास में 14 गोल कर चुके हैं। ग्रुप एफ के अन्य मैच में तुर्की ने जॉर्जिया को 3 . 1 से हराया।

टी20 क्रिकेट के लायक नहीं बाबर-सहवाग

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूर्व भारतीय क्रिकेटर वीरेंद्र सहवाग ने कहा है कि पाकिस्तान के कप्तान बाबर आजम टी20 क्रिकेट के लायक नहीं हैं। उनके पास वह तेजी नहीं है जो इसके लिए जरुरी है। टी20 विश्वकप में पाक टीम के खराब प्रदर्शन के बाद से ही आजम आलोचना का शिकार हुए हैं। पाक टीम टी20 विश्वकप में सुपर आठ में भी नहीं पहुंच पायी है। उसे अमेरिका से भी हार झेलनी पड़ी है। इस टूर्नामेंट के दौरान बाबर अपने कम स्ट्राइक रेट को लेकर भी निशाने पर रहे हैं। इसी को लेकर सहवाग ने कहा कि बाबर टी20 टीम के योग्य नहीं हैं। बाबर ने चैंपियंस 2017 ट्रॉफी 2017 और टी20 विश्व कप में 2022 में अच्छा खेल दिखाया पर अब उनका फार्म चला गया है। सहवाग ने एक शो के दौरान कहा कि बाबर उस तरह के बल्लेबाज नहीं हैं जो छक्के मार सकें। वह ऐसा तभी करते हैं जब वह सेट होते हैं और स्पिन गेंदबाजी का सामना करते हैं। मैंने उन्हें कभी भी पिच पर आगे बढ़ते या तेज गेंद मारते नहीं देखा। यह उसका खेल नहीं है। वह सुरक्षित क्रिकेट खेलता है, इसलिए वह लगातार रन बनाता है पर उसका स्ट्राइक रेट अच्छा नहीं है।

पेरिस ओलंपिक में स्वर्ण विजेता एथलीटों पर बरसेगा धन

पेरिस (एजेंसी)। पेरिस ओलंपिक खेलों में भाग लेने वाले एथलीटों को इसबार काफी लाभ होगा। इसका कारण है कि विश्व एथलेटिक्स (डब्ल्यूए) ने ट्रैक एवं फील्ड के 48 स्पर्धाओं के स्वर्ण पदक विजेताओं को 50,000 डॉलर करीब 41.60 लाख रुपये की पुरस्कार राशि देने की बात कही है। इस प्रकार डब्ल्यूए ओलंपिक खेलों में पुरस्कार राशि देने वाला पहला अंतरराष्ट्रीय महासंघ भी बन जाएगा। विश्व एथलेटिक्स के अध्यक्ष सेबेस्टियन को ने कहा कि ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेताओं के लिए पुरस्कार राशि की शुरुआत एथलेटिक्स के महत्व को देखते हुए की गयी है। साथ ही कहा कि हमने उन एथलीट की सहायता का फैसला किया है जो अपने प्रदर्शन से खेलों को वैश्विक स्तर पर सफल बनाते हैं। उन्होंने कहा, '' अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति के राजस्व आवंटन से कुल 2.4 मिलियन डॉलर लगभग 18.63 अरब रुपये पुरस्कार के लिए रखे गये है, जो हर चार साल में विश्व एथलेटिक्स को मिलता है। इसका उपयोग 48 एथलेटिक्स खेलों में से स्वर्ण पदक जीतने वाले एथलीटों को 50,000 डॉलर की राशि देकर किया जाएगा।'' इसके अलावा रिले टीमों को भी इसी राशि से सम्मानित किया जायेगा, जिसे टीम के सभी खिलाड़ी आपस में साझा करेंगे। उन्होंने कहा कि 2028 लॉस एंजिलिस ओलंपिक से जुड़ी पुरस्कार राशि के प्रारूप और संरचना की घोषणा खेलों के समय के करीब की जाएगी।

अगर भारत-अफगानिस्तान मैच बारिश की भेंट चढ़ जाए तो या होगा?

नई दिल्ली (एजेंसी)। टीम इंडिया टी20 वर्ल्ड कप के सुपर 8 के अपने पहले मैच में अफगानिस्तान से गुरुवार को टकराएगी। वेस्टइंडीज में खेले जाने वाले सुपर 8 के सभी मैचों पर बारिश का साया है। बारिश की वजह से वर्ल्ड कप के कई ग्रुप मैच धुल गए, टीम इंडिया को भी यही डर सता रहा है। भारत ने ग्रुप स्टेज में लगातार तीन मैच जीते हैं जबकि कनाडा के खिलाफ आखिरी स्टेज मैच बारिश के कारण रद्द हो गया था। वहीं अफगानिस्तान की टीम भी 3 मैच जीतकर सुपर 8 में खेलने पहुंची है। रोहित शर्मा की कप्तानी वाली भारत और राशिद खान की अफगानिस्तान टीम बारबाडोस ब्रिजटाउन के केंसिंग्टन ओवर में भिड़ेंगी। वहीं मौसम वेबसाइट एक्यूवेदर के मुताबिक भारत और अफगानिस्तान मैच के समय 44 प्रतिशत बारिश की संभावना है। ये मुकाबला भारतीय

समयानुसार रात 8 बजे से खेला जाएगा। साथ ही दिन का तापमान 31 डिग्री के आसपास रहेगा वहीं आर्द्रता लगभग 75 प्रतिशत रहेगी। ऐसे में अगर ये मैच बारिश की वजह से रद्द हुआ तो दोनों टीमों में एक एक अंक बांटा जाएगा। फिलहाल, भारत और अफगानिस्तान की टीमें टी20 मैचों में अभी तक 7 बार टकराई हैं। जहां सातों बार भारतीय टीम विजयी रही है। अफगानिस्तान को भारत के खिलाफ पहली जीत की तलाश है।

राशिद की कप्तानी वाली टीम ने टी20 वर्ल्ड कप में न्यूजीलैंड को हराकर बड़ा उलटफेर किया था। जिसके बाद भारतीय टीम को सतर्क रहने की जरूरत है। गौरतलब है कि, सुपर 8 में कुल 12 मैच खेले जाएंगे, इसी के तहत टीम इंडिया अपना पहला मैच 20 जून को अफगानिस्तान के खिलाफ खेलेगी। इसके बाद रोहित ब्रिगेड को 22 जून को बांग्लादेश और फिर तीसरे मैच में 24 जून को ऑस्ट्रेलिया से टकराना है। सुपर 8 में दो मैच जीतने वाली टीमें सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई कर जाएंगी।

टीम इंडिया का खेल बिगाड़ सकते हैं ये 5 अफगान खिलाड़ी

नई दिल्ली (एजेंसी)। टी20 वर्ल्ड कप 2024 के ग्रुप मैचों का दौर खत्म होने के साथ ही सुपर 8 में पहुंची टीमों ने आगे की रणनीति बनानी शुरू कर दी है। ग्रुप ए से टॉप पर रहकर अगले राउंड में पहुंची टीम इंडिया को अपना पहला मैच 20 जून को अफगानिस्तान के खिलाफ ब्रिजटाउन में खेलना है। रोहित शर्मा ब्रिगेड के सुपर 8 के अगले दो मैच 22 जून को बांग्लादेश के खिलाफ नॉर्थ साउंड और 24 जून को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ ग्रास आइसलेट में होने हैं।

अफगानिस्तान के खिलाफ टी20 वर्ल्ड कप में टीम इंडिया के पिछले देखते हुए कई फैंस पहले मैच को आसान मान रहे हैं जबकि वास्तव में अफगानिस्तान टीम मौजूदा सीजन में बेहतरीन प्रदर्शन कर रही है। हालांकि, अफगानिस्तान टीम अब तक के 3 मैचों में अफगान टीम कभी भी टीम इंडिया क हरा नहीं सकी है लेकिन मौजूदा टीम को किसी भी तरह से कमजोर नहीं आंका जा सकता। अफगानिस्तान टीम अपनी लड़ाकू क्षमता के कारण आज वनडे और टी20 की मजबूत टीम बन चुकी है। वर्ल्ड कप 20233 और मौजूदा टी20 2024 की मजबूत टीम बन चुकी है। वर्ल्ड कप 2023 और मौजूदा टी20 वर्ल्ड कप के अबतक प्रदर्शन पर नजर डाले तो राशिद खान की टीम को हल्के में लेना सही नहीं होगा। बल्लेबाजी और गेंदबाजी दोनों ही क्षेत्रों में टीम संतुलित है और इसके कुछ प्लेयर टॉप फॉर्म में हैं। इसके अलावा वेस्टइंडीज के धीमे विकेटों पर स्पिनरों का अहम रोल रहने की संभावना है। राशिद खान, मुजीबुर रहमान, नूर अहमद और मोहम्मद नबी के रूप में अफगानिस्तान के पास इस समय संभवतः दुनिया का सर्वश्रेष्ठ स्पिन अटैक है। इसके अलावा नबी, गुलबदीन और राशिद जैसे ऑलराउंडर टीम को और मजबूत करने का काम करते हैं।

1. रहमनुल्लाह गुरबाज

22 वर्षीय इस बल्लेबाज को अफगानिस्तान का भविष्य का स्टार माना जा रहा है। विकेटकीपर बल्लेबाज के तौर पर गुरबाज टीम की जरूरत बन जाते हैं। मौजूदा टूर्नामेंट के चार मैचों में 2 अर्धशतकीय पारी की मदद से सबसे ज्यादा 167 रन बनाए हैं। साथ ही वो छक्के और चौके लगाने में भी माहिर हैं। नेचुरअल स्ट्रोक प्लेयर गुरबाज के खिलाफ भारत को प्रभावी रणनीति बनानी होगी।

2. इब्राहिम जादरान

रहमनुल्लाह गुरबाज के साथ पारी की शुरुआत करने वाले जादरान इस वर्ल्ड कप में दो शतकीय साझेदारियां कर चुके हैं। जरुरत के मुताबिक बैटिंग का गेयर चेंज कर सकते हैं। आक्रामक ओपनर शहजाद की कमी की भरपाई की है। गुरबाज के साथ इनकी ओपनिंग जोड़ी टीम को कई मैचों में अच्छी शुरुआत दे चुके हैं।

3. फजलहक फारुकी

इस टी20 वर्ल्ड कप में फजलहक फारुकी सनसनी बनकर उभरे हैं। 23 साल के इस लेफ्ट आर्म बॉलर की गेंदों की गति ज्यादा नहीं है लेकिन सटीक लाइन लेंथ व वेरिएशंस से बल्लेबाजों की कठिन परीक्षा ले रहे हैं। 4 मैचों में अब तक 6.66 के औसत और 5.58 की इकोनॉमी से सबसे ज्यादा 12 विकेट लिए हैं। जिसमें से एक पारी में पांच और एक में चार विकेट का प्रदर्शन शामिल है।

4. राशिद खान

टी20 फॉर्मेट के सर्वश्रेष्ठ स्पिनरों में गिनती होती है। दाएं हाथ का ये रिस्ट स्पिनर टी20 वर्ल्ड कप 2024 में अफगान टीम का कप्तान भी है। तेज गति की अपनी गेंदों से बल्लेबाजों को शिकार बनाने में माहिर हैं। 4 ओवर के स्पैल में ही मैच का रुख पलटने में सक्षम हैं।

राशिद की गुगली को पढ़ने में बड़े-बड़े बल्लेबाज गच्चा खा जाते हैं। मौजूदा टूर्नामेंट के 4 मैचों में साधारण प्रदर्शन करते हुए 6 विकेट लिए हैं लेकिन कभी भी बल्लेबाजी में कमाल करने में सक्षम हैं। 89 टी20 में 14.36 के औसत और 6.07 की इकोनॉमी से 144 विकेट ले चुके हैं। इस फॉर्मेट में राशिद से ज्यादा विकेट टीम साउदी और शाकिब अल हसन ने ही लिए हैं। हालांकि, राशिद का रिकॉर्ड इन दोनों से काफी बेहतर है। बल्लेबाजी में टीम इंडिया के लिए सबसे बड़ा खतरा हैं। निचले क्रम के हार्डहिटिंग बैटर के तौर पर भी उपयोगी हैं।

5. मोहम्मद नबी

39 वर्षीय ऑलराउंडर मोहम्मद नबी क्रिकेट करियर के अंतिम पड़ाव पर हैं लेकिन मैदान पर जोश और चुस्ती-फुर्ती देखते ही बनती हैं। 125 टी20 में 6 अर्धशतक की मदद से 2140 रन बनाने के अलावा 95 विकेट इनकी ऑलराउंड क्षमता को दर्शाते हैं।

भारतीय फैंस के जेहन में अभी भी वर्ल्ड कप 2019 के भारत बनाम अफगानिस्तान के मैच की याद ताजा होगी जब नबी ने दो विकेट लेने के बाद 55 गेंदों पर 52 रन की पारी खेलकर भारतीय टीम को हार की कगार तक पहुंचा दिया था।

पूर्व भारतीय तेज गेंदबाज डेविड जॉनसन की बालकनी से गिरने के कारण मौत

बेंगलुरु (एजेंसी)। भारत के पूर्व तेज गेंदबाज डेविड जॉनसन की अपने अपार्टमेंट की चौथी मंजिल की बालकनी से गिरने के कारण मौत हो गई। कर्नाटक राज्य क्रिकेट संघ (केएससीए) के एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। वह 52 वर्ष के थे और उनके परिवार में पत्नी और दो बच्चे हैं। जॉनसन अपने घर के पास में ही क्रिकेट अकादमी चला रहे थे लेकिन पिछले कुछ समय से अस्वस्थ थे। केएससीए के अधिकारी ने कहा,''हमें बताया गया कि वह अपने अपार्टमेंट की चौथी मंजिल से गिर गए थे। उन्हें अस्पताल ले जाया गया, लेकिन चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।'' जॉनसन ने भारत की तरफ से दो टेस्ट मैच खेले। उन्होंने कुल 39 प्रथम श्रेणी मैच खेले। वह कर्नाटक की उस मजबूत गेंदबाजी इकाई का हिस्सा थे जिसमें अनिल कुंबले, जवागल श्रीनाथ, वेंकटेश प्रसाद और डोडा गणेश शामिल थे। भारत के पूर्व गेंदबाज और जॉनसन के लंबे समय तक साथी रहे गणेश ने कहा,''यह बेहद दुखद खबर है क्योंकि हम टेनिस क्रिकेट के दिनों से ही एक क्लब जय कर्नाटक की तरफ से खेला करते थे।'' उन्होंने कहा,''इसके बाद हम राज्य और देश के लिए भी साथ में खेले। कर्नाटक का यह गेंदबाजी आक्रमण लंबे समय तक भारतीय गेंदबाजी आक्रमण दे रहा। असल में एक समय राहुल द्रविड़ सहित कर्नाटक के छह खिलाड़ी भारतीय टीम का हिस्सा थे। मुझे नहीं लगता कि किसी अन्य राज्य के नाम पर यह उपलब्धि होगी।'' दिग्गज लेकर स्पिनर अनिल कुंबले ने भी जॉनसन के निधन पर शोक व्यक्त किया। कुंबले ने एक्स पर पोस्ट किया,''क्रिकेट के दिनों के मेरे साथी डेविड जॉनसन के निधन से बेहद दुखी हूं।

मंधाना और हरमनप्रीत के शतक, भारत ने दक्षिण अफ्रीका को चार रन से हराया

बेंगलुरू (एजेंसी)। स्मृति मंधाना और कप्तान हरमनप्रीत कौर के शतक से भारत ने बड़े स्कोर वाले दूसरे महिला एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच में बुधवार को यहां दक्षिण अफ्रीका को चार रन से हराकर तीन मैच की श्रृंखला में 2-0 की विजयी बढ़त बना ली। भारत के 326 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए दक्षिण अफ्रीका की टीम कप्तान लॉरा वोलवार्ट (135 रन, 135 गेंद, 12 चौके, तीन छक्के) और मारिजेन कैप (114 रन, 94 गेंद, 11 चौके, तीन छक्के) के बीच चौथे विकेट की 184 रन की साझेदारी के बावजूद 50 ओवर में छह विकेट पर 321 रन ही बना सकी। वोलवार्ट ने अंत में नेदिन डि क्लर्क (28) के साथ पांचवें विकेट के लिए 41 गेंद में 69 रन जोड़े लेकिन टीम को जीत नहीं दिला सकीं। भारत की तरफ से पूजा वस्त्राकर ने 54 जबकि दीप्ति शर्मा ने 56 रन देकर दो-दो विकेट चटकाए। भारत ने इससे पहले मंधाना (136) और हरमनप्रीत (नाबाद 103) के शतक और दोनों के बीच तीसरे विकेट की 171 रन की साझेदारी से तीन विकेट पर 325 रन का बड़ा स्कोर खड़ा किया। यह पहला महिला एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय मुकाबला है जिसमें चार शतक जड़े गए। मंधाना ने अपने लगातार

दूसरे और कुल सातवें एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय शतक के दौरान 120 गेंद में 18 चौके और दो छक्के मारे। हरमनप्रीत अपने छठे शतक के दौरान 88 गेंद का सामना करते हुए नौ चौके और तीन छक्के जड़े। लक्ष्य का पीछा करते हुए दक्षिण अफ्रीका ने चौथे ओवर में ही टैजमिन ब्रिट्स (05) का विकेट गंवा दिया जिन्हें अरुंधति रेड्डी ने बोल्ड किया। सलामी बल्लेबाज वोलवार्ट और एनेके बॉश (18) ने टीम का स्कोर 50 रन के पार पहुंचाया। बॉश 15 रन के स्कोर पर भाग्यशाली रहीं जब दीप्ति की गेंद पर आशा शोभना ने उनका कैच टपका दिया।

बॉश हालांकि इस जीवनदान का फायदा नहीं उठा सकीं और दीप्ति की ही गेंद पर जेमिमा रोड्रिग्ज को आसान कैच दे बैठीं। मंधाना ने अपनी कामचलाऊ ऑफ स्पिन गेंदबाजी से सुने लूस (12) को दूसरी ही गेंद पर विकेटकीपर रिचा घोष के हाथों कैच कराया। यह मंधाना का पहला अंतरराष्ट्रीय विकेट है। वोलवार्ट और मारिजेन की अनुभवी जोड़ी ने इसके बाद पारी को आगे बढ़ाया। मारिजेन शुरू से ही अच्छी लय में नजर आई और उन्होंने कुछ आकर्षक शॉट खेले जिसमें मंधाना पर जड़ा छक्का भी शामिल है। दोनों ने 21वें ओवर में टीम के रनों का शतक पूरा किया। वोलवार्ट ने वस्त्राकर पर चौके के साथ 69 गेंद में अर्धशतक पूरा किया। वह साथ ही महिला एकदिवसीय क्रिकेट में 4000 अंतरराष्ट्रीय रन बनाने वाली अपनी देश की पहली खिलाड़ी बनीं। मारिजेन ने भी राधा यादव की गेंद पर एक रन के साथ 53 गेंद में 16वां अर्धशतक पूरा किया। मारिजेन ने अर्धशतक पूरा करने के बाद तीखे तेवर दिखाए और दीप्ति की गेंद पर दो रन के साथ सिर्फ 85 गेंद में शतक पूरा किया।

दक्षिण अफ्रीका को अंतिम 10 ओवर में जीत के लिए 103 रन की दरकार थी। वोलवार्ट ने शेफाली वर्मा पर छक्का मारा। मारिजेन ने भी दीप्ति पर छक्का जड़ा लेकिन एक गेंद बाद इसी शॉट को दोहराने की कोशिश में लॉन्ग ऑफ बाउंड्री पर वस्त्राकर के हाथों लपकी गईं। वोलवार्ट ने आशा की गेंद पर एक रन के साथ 119 गेंद में शतक पूरा किया और फिर लगातार गेंदों पर छक्का और चौका मारा। दक्षिण अफ्रीका को अंतिम पांच ओवर में 54 रन की जरूरत थी। शेफाली और दीप्ति ने अपने ओवरों में आठ-आठ रन दिए जबकि वोलवार्ट ने वस्त्राकर के ओवर में चौके और छक्के से 15 रन जुटाए।

फुटबॉल जगत को स्टार खिलाड़ी एमबापे की नाक की चोट पर अपडेट का इंतजार

पैडरबोर्न (एजेंसी)। फुटबॉल जगत को किलियन एमबापे की नाक की चोट पर अपडेट का इंतजार है और प्रशंसक जानना चाहते हैं कि फ्रांस का यह सुपरस्टार यूरोपीय चैम्पियनशिप से कितने समय तक बाहर रहेगा। एमबापे के दो साथी खिलाड़ियों ने उनकी चोट पर सकारात्मक जानकारी दी है। मिडफील्डर एड्रियन रबियोट ने बुधवार को यहां प्रेस कांफ्रेंस में एक अनुवादक के जरिये कहा, ''नाक में फ्रेक्चर दुनिया का अंत नहीं है। किलियन को जल्द ही हमारे साथ होना चाहिए।'' विलियम सलीबा ने कहा कि उन्होंने एमबापे से बात की जो थोड़ा बेहतर महसूस कर रहे हैं। फ्रांस के ग्रुप डी मुकाबले में आस्ट्रिया पर मिली 1-0 की जीत के दौरान एमबापे प्रतिद्वंदी टीम के डिफेंडर केविन डान्सो से टकरा गये थे और उनकी नाक में फ्रेक्चर हो गया था। उनकी नाक सूज गयी थी और खून बह रहा था जिससे उनकी सफेद जर्सी लाल हो गयी थी। उनकी नाक की और अन्य जांच हो रही है। फ्रांस की टीम ने कहा कि अगर एमबापे टूर्नामेंट में खेलते हैं तो उन्हें मास्क पहनकर खेलना होगा। फ्रांस का अगला मैच शुक्रवार को नीदरलैंड से है और टीम ने अभी तक आधिकारिक रूप से एमबापे की उपलब्धता की पुष्टि नहीं की है। सलीबा ने कहा, ''मैंने उसे सुबह देखा, वह थोड़ा बेहतर थे। मुझे लगता है कि वह और जांच कराने जायेंगे। मैं इससे ज्यादा नहीं जानता।'' उन्होंने कहा, ''लेकिन जब मैंने उन्हें देखा तो वह थोड़े बेहतर दिख रहे थे।'' उम्मीद है कि एमबापे यूरो 2024 के आगे के हिस्से में

खेलेंगे क्योंकि आस्ट्रिया पर जीत से फ्रांस के 29 जून से शुरू होने वाले नॉकआउट चरण में पहुंचने की संभावना है। फ्रांस 30 जून से पहले राउंड 16 के मैच नहीं खेलेगह। रैबियोट ने कहा कि वह नहीं जानते कि एमबापे कब तक बाहर रहेंगे और कहा, ''किलियन के बिना खेलना मुश्किल होगा। वह बहुत महत्वपूर्ण खिलाड़ी है और हमारा कप्तान भी है। इसलिये इसका असर पड़ेगा। प्रतिद्वंद्वी के लिए भी अपने मैच की तैयारी करना अलग होगा। मैं चाहता हूं कि वह खेलें।'' एमबापे के विकल्प के तौर पर फ्रांस के पास ओलिवर गिरोड और रंडाल कोलो मुआनी हैं।

नये सत्र में मेहनत से पढ़ाई कर लक्ष्य को प्राप्त करें : कलेक्टर

भविश्य से भेंट कार्यक्रम में कलेक्टर पहुंचे कन्या हाई स्कूल धवारी

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। 'स्कूल चले हम' अभियान के तहत प्रवेशोत्सव के तीसरे दिन भविष्य से भेंट कार्यक्रम के तहत कलेक्टर अनुराग वर्मा गुरुवार को शासकीय कन्या हाई स्कूल धवारी पहुंचे और छात्राओं से संवाद किया। कलेक्टर ने छात्र-छात्राओं के बीच पहुंचकर उन्हें अपनी ओर से कॉपियां, पेन, चॉकलेट और टॉफियां भेंट कर नियमित रूप से स्कूल आने के लिए प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर डीपीसी विष्णु त्रिपाठी, जनसंपर्क अधिकारी राजेश सिंह, शाला की प्राचार्य राजवी श्रीवास्तव सहित शिक्षिकायें एवं छात्राएं उपस्थित रहीं।

कलेक्टर अनुराग वर्मा ने भविष्य से भेंट कार्यक्रम में छात्राओं से संवाद करते हुए कहा कि पढ़ाई केवल स्कूल में ही होती है, ऐसा कतई नहीं है। घर, स्कूल में पढ़ाई के साथ दैनिक जीवन में जो कुछ भी सीखा जाता है, उससे ज्ञान और अनुभव बढ़ता है। व्यक्ति हर समय किसी न किसी व्यक्ति से सीखता है। अच्छे और बुरे ज्ञान की पहचान करें और जो अच्छाइयों का ज्ञान है उसे ही ग्रहण करें। कलेक्टर ने कहा कि शिक्षा के लिए संसाधन महत्वपूर्ण नहीं होते, बल्कि मेहनत और समर्पण की भावना महत्वपूर्ण होती है। अपने दैनिक जीवन में जो कुछ भी अच्छा सीखें उसे आत्मसात करें। पढ़ाई सिर्फ नौकरी के लिए नहीं करें, नौकरी को बाय प्रोडक्ट के रूप में लें। अध्ययन में स्कूली शिक्षा एक अच्छे कैरियर और भविष्य बनाने की बुनियाद होती है। हम जो भी सीखें उसे अपने जीवन में उतारें। अपने लिए आप जितना अच्छा कर सकेंगे, आपका परिवार, समाज, देश उतना ही बेहतर बनेगा।

कलेक्टर ने कहा कि यह समय आपकी जड़ों को मजबूत करने का है। आपकी मेहनत का फायदा परिवार, समाज और देश को भी मिलता है। नए सत्र में और अधिक उत्साह से मेहनत करें और पिछले सत्र में जो मुकाम हासिल नहीं कर पायें, उन्हें प्राप्त करने का प्रयास करें।

डीपीसी विष्णु त्रिपाठी ने बताया कि राज्य शासन के निर्देशानुसार स्कूल चले हम अभियान के प्रवेशोत्सव की तीसरे दिन जिले, विकासखंड के सभी अधिकारी किसी एक स्कूल में जाकर भविष्य से भेंट कार्यक्रम में शामिल हो रहे हैं। ताकि स्कूल के छात्र-छात्राएं उनसे मार्गदर्शन और प्रेरणा लेकर अपना कैरियर बनाएं। अभियान के पहले दिन सभी स्कूल पहुंचे बच्चों को तिलक-गुलाल लगाकर स्वागत कर प्रवेश उत्सव मनाया गया है। प्रवेश उत्सव के दूसरे दिन छात्रों के अभिभावकों को स्कूल में आमंत्रित कर सम्मेलन भी किया गया है। उन्होंने कहा कि सभी छात्र-छात्राएं स्कूलों में नियमित आना प्रारंभ करें। सभी स्कूल खुल गए हैं और नए सत्र की सभी कक्षाएं विधिवत प्रारंभ की जा रही हैं।

स्कूल चले हम अभियान : भविष्य से भेंट कार्यक्रम में अधिकारियों ने किया बच्चों का मार्गदर्शन

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। शाला जाने योग्य प्रत्येक बच्चे का शाला में प्रवेश सुनिश्चित करने के लिए स्कूल चलें अभियान के तहत विद्यालयों में तीन दिवसीय प्रवेशोत्सव मनाया जा रहा है। प्रवेशोत्सव के अंतिम दिन शासकीय विद्यालयों में गुरुवार को भविष्य से भेंट कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें जिले के जनप्रतिनिधि विभिन्न क्षेत्रों के अग्रणी व्यक्ति, अधिकारी, समाजसेवी, खिलाड़ी, पत्रकार तथा गणमान्य नागरिक स्वयं द्वारा चुनी गई शाला में जाकर विद्यार्थियों को प्रेरक उद्बोधन दिया।

इसी कड़ी में अपर कलेक्टर मैहर शैलेंद्र सिंह ने अमरपाटन तहसील के ग्राम पंचायत पोड़ी कला के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में भविष्य से भेंट कार्यक्रम के तहत छात्रों के संवाद किया। उन्होने छात्रों के साथ खेल प्रतियोगिता का आयोजन उनका उत्साहवर्धन भी किया। इसी प्रकार एसडीएम अमरपाटन आरती सिंह शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय अमरपाटन में भविष्य से भेंट के कार्यक्रम में शामिल हुईं। उन्होने नवप्रवेशित विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों को शिक्षा नीति और बच्चों के कैरियर के संबंध में अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने बच्चों को अपना मार्गदर्शन प्रदान कर सभी का उत्साहवर्धन किया। उन्होने कहा कि छात्र जीवन का उपयोग ज्यादा से ज्यादा सीखने में करें। अभिभावकों का भी दायित्व बनता है कि कोई बच्चा शिक्षा के अधिकार से वंचित नहीं रहने पाये। इस अवसर पर शाला में आमंत्रित व्यक्तियों द्वारा विद्यार्थियों को पठन-पाठन से संबंधित उपयोगी सामग्री भेंट भी की गई।

इसी प्रकार जिले के अन्य शासकीय विद्यालयों में प्रथम तथा द्वितीय श्रेणी के अधिकारी भविष्य से भेंट कार्यक्रम में शामिल हुये। एसडीएम रामनगर डॉ आरती सिंह 'भविष्य से भेंट' कार्यक्रम के तहत शासकीय बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय रामनगर पहुंचीं। इस दौरान उन्होंने कक्षा 10वीं और 12वीं के छात्र-छात्राओं को अंग्रेजी विषय का 'द ब्लैक एयरोप्लेन' चैप्टर पढ़ाया। इसके बाद उन्होंने छात्रों का मौखिक टेस्ट भी लिया। छात्रों के शैक्षणिक और बौद्धिक स्तर परखने उनसे सवाल भी किये। प्रवेशोत्सव कार्यक्रम के तहत जिला प्रबंधक लोक सेवा ऋतुराज पांडेय ने शासकीय हाई स्कूल डाम्हा में भविष्य से भेंट कार्यक्रम के तहत बच्चों की क्लास ली।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस आज

जिला स्तरीय कार्यक्रम शासकीय व्यंकट-1 सतना के पीछे के मैदान में होगा आयोजित

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। मध्यप्रदेश शासन के निर्देशानुसार 21 जून 2024 को दसवें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर सामूहिक योग कार्यक्रम आयोजित किया जायेगा। शासन के निर्देशानुसार प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी पूरे प्रदेश में सभी जिलों, विकासखंडों, पंचायत स्तर अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की गतिविधियां वृहद स्तर पर आयोजित की जायेंगी। इन कार्यक्रमों में शासकीय, अशासकीय विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों के अलावा सभी शैक्षणिक संस्थानों के विद्यार्थी भाग लेंगे। इसके साथ ही योग संस्थानों, एनएसएस, पुलिसकर्मियों, विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों, शासकीय सेवकों, स्वयंसेवी संस्थाओं, वाणिज्यिक एवं औद्योगिक संस्थानों की भी सहभागिता सुनिश्चित की जायेगी। संपूर्ण प्रदेश में एक साथ, एक समय पर अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम का आयोजित किया जायेगा।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के आयोजन के संबंध में जारी समय-सारणी के अनुसार प्रात: 6 बजे अतिथि आगमन होगा। प्रात: 6.02 बजे अतिथियों का उद्बोधन, प्रात: 6:10 से मुख्य कार्यक्रम का सीधा प्रसारण एवं प्रात: 7 बजे से 7:45 तक सामान्य योग अभ्यास कार्यक्रम होगा। जिसका सीधा प्रसारण दूरदर्शन एवं आकाशवाणी रेडियो के माध्यम से किया जायेगा। कार्यक्रम का नोडल विभाग आयुष विभाग को बनाया गया है। सतना में योग दिवस का कार्यक्रम शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय व्यकंट क्रमांक-1 सतना के पीछे के मैदान में आयोजित होगा।

22 जून को बाधित रहेगा विद्युत प्रवाह

सतना 20 जून 2024/कार्यपालन अभियंता (विद्युत) ने बताया कि 22 जून को प्रात: 9 बजे से 11 बजे तक 132 केवी उपकेंद्र अमरपाटन से निकलने वाले 32 केवी मेनबेस फीडर एवं अन्य मेंटीनेंस के कार्य

बारिश के पूर्व अधिकतर निर्माण कार्य कंप्लीट करें : कलेक्टर

50 लाख रुपये की अधिक लागत के निर्माण कार्यों की समीक्षा

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। कलेक्टर अनुराग वर्मा ने निर्माण विभागों एवं एजेंसियों से वर्तमान में जिले में चल रहे निर्माण और विकास के कार्यों को अधिकाधिक रूप से बरसात के पहले पूर्ण कर लेने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने सड़कों के डामरीकरण का कार्य भी एक-दो दिन के भीतर पूर्ण करा लेने को कहा है। कलेक्टर ने गुरुवार को ग्रामीण यांत्रिकी सेवा, जल निगम, लोक निर्माण, एमपीएसआरडीसी, हाउसिंग बोर्ड, पीआईयू, नर्मदा घाटी विकास के अधिकारियों की बैठक लेकर 50 लाख रुपए से अधिक लागत वाले कार्यों की समीक्षा की। इस मौके पर सीईओ जिला पंचायत संजना जैन भी उपस्थित रहीं।

हाउसिंग बोर्ड के कार्यों की समीक्षा में कलेक्टर ने कहा कि आई आईएसबीटी सतना शहर का अत्यंत आवश्यक और महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट है। कार्य पूर्ण होने की समय-सीमा निकल चुकी है। जिसमें 30 सितंबर 2024 तक एक्सटेंशन मिला है। आईएसबीटी के निर्माण कार्य में तेजी लाएं और समय-सीमा में काम पूरा करें, ताकि शहर में ट्रैफिक की समस्या से शीघ्र राहत मिले। उन्होंने कहा कि आईएसबीटी का काम अत्यंत धीमा होने के फलस्वरुप ठेकेदार को नोटिस भी दें। लोक निर्माण पीआईयू ने बताया कि जिले में कुल 23 कार्य स्वीकृत हैं। जिनमें 21 निर्माण कार्य जारी हैं। रामपुर बघेलान, नागौद, सोहावल में आईटीआई भवन और बिरसिंहपुर, रैगांव में अस्पताल भवन 31 अगस्त 2024 तक पूरे कर लिए जाएंगे।

जल निगम के कार्यों की समीक्षा में कलेक्टर ने कहा कि पूरे जिले में जल जीवन मिशन के तहत पाइपलाइन बिछाई जा रही है। जल निगम के अधिकारी सभी निर्माण विभागों को पाइपलाइन बिछाने का प्लान और डिजाइन शेयर करें। उन्होंने कहा कि सड़क निर्माण वाले विभाग जल जीवन मिशन की बिछाई जा रही पाइपलाइन को बिना क्षतिग्रस्त किये अपनी सड़के बनायें। अन्यथा की स्थिति में जिस विभाग ने भी पाइपलाइन को तोड़ा या छतिग्रस्त किया, तो उतनी मरम्मत की राशि जल निगम को देनी होगी।

कलेक्टर ने सभी निर्माण विभागों से कहा कि अधूरे निर्माण कार्यों पर विशेष ध्यान दें। ताकि बरसात में क्षतिग्रस्त नहीं हों। जल संसाधन और आरईएस के अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि अमृत सरोवर, बांध तथा तालाबों में बेस्ट बियर और अधिक पानी निकालने की व्यवस्था दुरुस्त रखें। ताकि ओव्हरफ्लो की स्थिति में संरचनायें टूटे नहीं। आरईएस के कार्यों की समीक्षा में कलेक्टर ने कहा कि बड़ी पंचायतों में बनाए गए हाट बाजार ग्राम पंचायतों को हैंडओवर कर उन्हें उपयोगी बनाएं। पीआईयू एवं ग्रामीण विकास के भवन कार्यों को बरसात के पूर्व बाहर का कार्य पूर्ण कर आंतरिक कार्य बरसात के दौरान भी प्रारंभ रखने के निर्देश दिए गए।

साथी ने ही कि थी फारेस्ट चौकीदार की हत्या

जंगल की जमीन पर निर्माण और रुपयों लेनदेन पर विवाद, गला घोंट कर लटका दिया था फंदे पर

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। बरौंधा थाना क्षेत्र में फारेस्ट के चौकीदार की हत्या जंगल की जमीन पर निर्माण और रुपयों के लेनदेन के विवाद पर की गई थी। चौकीदार का गला घोंट कर शव को फांसी के फंदे पर झुला दिया गया था ताकि हत्या का ये मामला आत्महत्या लगे। लेकिन उसका गुनाह बेपर्दा हो गया और पुलिस ने उसे दबोच लिया।

बरौंधा थाना पुलिस ने बैरहा नाला के पास फांसी के फंदे पर झूलते मिले केल्हौरा के फारेस्ट गार्ड राम सजीवन यादव की मौत की गुत्थी सुलझा ली है। इस मामले में मृतक के ही साथी रामजस मवासी पिता बेलिया उर्फ बेला मवासी (26) निवासी पटनी थाना मझगवां को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने बताया कि आरोपी रामजस ने दैनिक वेतन भोगी वनकर्मी रामसजीवन यादव की हत्या गला घोंट कर की थी और फिर लाश को पत्थरों के बीच छिपा दिया। रात में शव को उसने एक पेड़ पर फांसी के फंदे से झुला दिया। उसने यह वारदात मृतक के साथ वनभूमि पर निर्माण और जोताई करने तथा पैसों को लेकर हुए विवाद के कारण की थी।

पुलिस ने बताया कि 16 जून को राम सजीवन अपने घर से ड्यूटी पर निकला था। दोपहर 11 बजे उसकी बात अपने बेटे से फोन पर हुई थी। उसने कहा था कि वह खाना खाने थोड़ी देर बाद आएगा लेकिन शाम 5 बजे मृतक का साथी मंजू सिंह उसकी टूटी फूटी बाइक उसके घर पहुंचा गया। जब बेटे ने मंजू से पिता के बारे में पूछा तो जवाब में उसने कहा कि वह और रामसजीवन दोपहर में रामविश्वास वर्मा के यहां मुर्गा लेने गए थे। इसी बीच रामसजीवन पैदल ही निकल कर कहीं चला गया। रात में भी राम सजीवन के न लौटने पर उसके बेटे ने बरौंधा थाना में शिकायत दर्ज कराई थी।

अगले दिन सुबह रामसजीवन की लाश पेड़ पर लटकी मिली थी। पीएम रिपोर्ट में पता चला कि रामसजीवन की मौत गला घोंट कर की गई थी। पुलिस ने सन्देह के आधार पर मंजू, राम विश्वास, गप्पू व रामजस से पूछताछ की। रामजस ने जुर्म कबूल कर सारी कहानी बयान कर दी।

अनुदान पर कृशि यंत्र उपकरणों के लिये ई-पोर्टल पर आवेदन 26 तक

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। संचालनालय कृषि अभियांत्रिकी मध्यप्रदेश भोपाल द्वारा ई-कृषि यंत्र अनुदान पोर्टल पर सतना जिले के लक्ष्य निर्धारित कर दिये गये हैं। सहायक कृषि यंत्री सतना वीपी त्रिपाठी ने बताया कि सतना और मैहर जिले के लक्ष्यानुसार इच्छुक किसानों से अनुदान पर कृषि यंत्र क्रय करने पोर्टल पर 26 जून तक आवेदन आमंत्रित किये गये हैं। प्राप्त आवेदनों के आधार पर 27 जून 2024 को लॉटरी के माध्यम से हितग्राही का चयन किया जायेगा।

निर्धारित लक्ष्यानुसार रोटावेटर के लिये 9 का लक्ष्य है और इसके लिये 5 हजार रुपये का डिमांड ड्राफ्ट (डीडी) धरोहर राशि के रुप में देना होगा। सीड कम फर्टिलाइजर ड्रिल/जीरो ट्रिलेज सीड कम फर्टिलाइजर ड्रिल/रेज्ड वेड प्लांटर, रिजेफेरो प्लांटर और मल्टीक्रॉप प्लांटर के लिये 7 का लक्ष्य है। इसके लिये 2 हजार रुपये की डीडी धरोहर के रुप में देनी होगी। मांग अनुसार आवेदन की श्रेणी में आवेदन की अंतिम तिथि निर्धारित नहीं हैं। इनमें कृषि यंत्र सुपर सीडर, न्यूमेटिक प्लांटर, स्वचालित टूल बार-राइड ऑन टाइप के लिये 5-5 हजार रुपये की डीडी धरोहर राशि के रुप में देनी होगी। कृषक स्वयं के बैंक खाते से धरोहर राशि का डिमांड ड्राफ्ट संबंधित जिले के सहायक कृषि यंत्री सतना के नाम बनवाकर आवेदन कर सकते हैं। संबंधित विषय की जानकारी के लिये मोबाइल नंबर 8224029722 पर संपर्क किया जा सकता है।

एक जुलाई को मैहर म्यूजिक अटाला आर्ट सिटी के तत्वाधान में आयोजित होगा शास्त्रीय संगीत कार्यक्रम

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। मां शारदा की पावन नगरी एवं संगीत सम्राट पद्म विभूषण बाबा अलाउद्दीन खाँ साहब की साधना स्थली मैहर में शास्त्रीय संगीत के उभरते हुये नवोदित कलाकारों कों मंच देने का कार्य जिला प्रशासन के सहयोग से मैहर म्यूजिक अटाला आर्ट सिटी के तत्वाधान में 1 जुलाई 2024 से प्रारंभ किया जा रहा है। यह कार्यक्रम शास्त्रीय संगीत महाविद्यालय, मैहर के सभागार में सायं 7 बजे से रात्रि 9 बजे तक सम्पन्न होगा। शास्त्रीय संगीत के इस कार्यक्रम में शास्त्रीय गायन, वादन एवं नृत्य के कलाकार अपनी प्रस्तुति दे सकेंगे। इच्छुक कलाकार कार्यक्रम में शामिल होने के लिये अपने आवेदन बायोडाटा के साथ 24 जून 2024 तक संगीत महाविद्यालय मैहर में प्रभारी अनिल कुमार जायसवाल, सहायक व्याख्याता (मो.नं. 7987274350) के पास जमा कर सकते हैं। मैहर घराने को जीवंत बनाने एवं विद्या की देवी माँ शारदा की नगरी को संगीत मय बनाने के लिये शास्त्रीय संगीत कार्यक्रम का आयोजन प्रत्येक माह की 1 तारीख को किया जायेगा। जिला प्रशासन मैहर ने शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर नागरिकों से शामिल होने का अनुरोध किया है।

जिला पंचायत उपाध्यक्ष ने ली शासकीय हाई स्कूल प्रचार्यो की बैठक

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। जिला पंचायत सभागार सतना में स्थाई शिक्षा समिति के द्वारा सत्र 2023 - 2024 के हाई स्कूल परीक्षाओं के परिणामो की समीक्षा हेतु प्राचार्यों की बैठक जिला पंचायत सतना की उपाध्यक्ष एवं स्थाई शिक्षा समिति की पदेन अध्यक्ष सुष्मिता डॉ.पंकज सिंह परिहार जी के उपस्थिति में संपन्न हुई। इस महत्वपूर्ण बैठक में जिला पंचायत स्थाई शिक्षा समिति द्वारा सतना / मैहर जिले के जिला स्तर पर प्रथम पांच स्थान प्राप्त करने वाले हाई स्कूलों के प्राचार्यों को सम्मानित किया गया । इस महत्वपूर्ण बैठक में जिला पंचायत सदस्य एवं स्थाई शिक्षा समिति के सदस्य संजय सिंह कछवाह, प्रियंका वर्मा , एकता अनूप सिंह बघेल, जिला शिक्षा अधिकारी मे पदस्थ सहायक संचालक गिरीश अग्निहोत्री, जिला स्थाई शिक्षा समिति के सह संयोजित सदस्य डॉ पंकज सिंह परिहार एवं सतना/ मैहर जिले के आठों विकासखंड के विकासखंड शिक्षा अधिकारी, विकासखंड स्त्रोत समन्वयक अधिकारी सहित सतना/मैहर जिले के प्राचार्य उपस्थित रहे।

चित्रकूट के विकास के लिए संस्कृति विभाग कार्ययोजना तैयार करे : मुख्य सचिव

मुख्य सचिव ने वीडियो कान्फ्रेंसिंग से की रामपथ गमन के कार्यों की समीक्षा

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। प्रदेश की मुख्य सचिव वीरा राणा ने गुरुवार को वीडियो कान्फ्रेंसिंग से चित्रकूट में चल रहे विकास कार्यों तथा श्रीराम वन पथ गमन के निर्माण कार्यों की समीक्षा की। मुख्य सचिव ने कहा कि चित्रकूट को अयोध्या और उज्जैन की तरह विश्व स्तरीय धार्मिक स्थल के रूप में विकसित किया जाएगा। इसके विकास की पूरी कार्ययोजना संस्कृति विभाग तैयार करे। निर्धारित कार्ययोजना के अनुसार सभी विभाग अपने-अपने कार्यों को समय-सीमा में पूरा करें। चित्रकूट को बुंदेलखण्ड एक्सप्रेस वे से जोड़ने तथा रीवा-जबलपुर फोरलेन सड़क से जुड़ने के लिए फोरलेन सड़कों का निर्माण तत्काल शुरू कराएं। चित्रकूट के मंदिर परिसरों, कामदगिरि परिक्रमा पथ, मंदाकिनी नदी के विभिन्न घाटों के विकास के कार्य डीपीआर में शामिल कराएं। पर्यटन के विकास के लिए पीपीपी मोड पर होटल तथा अन्य पर्यटन सुविधाओं का विकास किया जाएगा। इसके लिए आवश्यक भूमि कलेक्टर सतना चिन्हांकित करें। आवश्यक होने पर वन भूमि के बदले राजस्व भूमि प्राप्त करने तथा निजी जमीनों के अधिग्रहण के प्रस्ताव तैयार करें।

मुख्य सचिव ने कहा कि मुख्यमंत्री जी द्वारा ली गई बैठक के निर्णयों पर संबंधित विभाग तत्परता से कार्यवाही करें। चित्रकूट विकास प्राधिकरण के गठन के साथ-साथ नगर परिषद चित्रकूट में आवश्यक अधिकारियों-कर्मचारियों की पदस्थापना करें। चित्रकूट को राजस्व अनुभाग बनाने की भी कार्यवाही सुनिश्चित करें। कलेक्टर सतना चित्रकूट के मार्गों तथा मंदिर परिसरों से अतिक्रमण हटाने की कार्यवाही तत्परता से करें। मुख्य सचिव ने अमरकंटक के विकास के संबंध में कलेक्टर अनूपपुर को निर्देश दिए। बैठक में अतिरिक्त मुख्य सचिव धर्मस्व राजेश राजौरा तथा प्रमुख सचिव संस्कृति विभाग शिवशेखर शुक्ला ने चित्रकूट में किए जा रहे विकास कार्यों की बिंदुवार जानकारी दी। वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से कलेक्ट्रेट कार्यालय के एनआईसी कक्ष से कलेक्टर अनुराग वर्मा, डिप्टी कलेक्टर गोविंद सोनी, एसडीएम मझगवां जितेन्द्र कुमार वर्मा तथा अन्य संबंधित अधिकारी शामिल हुए।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683
प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।